नया क्षितिज

2019-21

शिक्षा विभाग

के० एल० डी०ए०वी० (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, रुड़की

स्व. राय साहब कन्हैयालाल जी

कन्हैयालाल जी का जन्म श्री गणेश लाल जी के घर जसौला, जिला मुजफ्फरनगर में सन् 1870 की कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था, इसलिए उनका नाम कन्हैयालाल रखा गया। कन्हैयालाल जी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इसलिए सरकार ने उन्हें राय साहब की उपाधि से अलंकृत किया था। 1960 में रूड़की में बी.एस-सी. और बी.ए. के लिए के.एल. डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज की स्थापना की थी।

SPECIAL NOTE:
THE LINE ARTS USED FOR THE STUDENTS' WRITINGS ARE TAKEN FROM VARIOUS SOURCES AS A RESULT OF GOOGLE SEARCH AND THE SOURCES ARE NOT MENTIONED WITHIN THE WRITINGS. LINE ART IS NOT SELF MADE, THEREFORE, I APPRECIATE & ACKNOWLEDGE ALL THE IMAGE-SOURCES COLLECTIVELY HERE.

नया क्षितिज

बी० एड०, सत्र २०१९-२१

शि क्षा सं का य प त्रि का
स म्पा द क म ण्ड ल

प्राचार्य	--	**डॉ० एम० पी० सिंह**
प्राचार्या	--	**डॉ० (श्रीमती) यशोदा मित्तल** **(सेवानिवृत - अक्टूबर 2021)**
संरक्षिका	--	**डॉ० (श्रीमती) पूर्णिमा श्रीवास्तव**
शिक्षक गण	--	**डॉ० मेघा जुयाल** **डॉ० मनोज कुमार शर्मा** **डॉ० अम्बिका भट्ट** **डॉ० मोनू राम**
सम्पादक	--	**डॉ० अम्बिका भट्ट**
मुख्य सम्पादक (विद्यार्थी)	--	**संतोषी चौहान**

विशेष- लेखक अपनी रचनाओं की अन्तर्वस्तु के लिए स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक मण्डल के किसी भी सदस्य पर इसका कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा, तथापि टंकण में त्रुटियां होना सम्भावित हैं ।

के० एल० डी०ए०वी० (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, रुड़की

कुल गीत

जय सरस्वती जय भारती
हिमगिरि शृंगों पर है राजती
अविरल गंगा पद पखारती
छवि छटा बिखारती
जय सरस्वती जय भारती।

कम्प्यूटर जनपद यांत्रिकी
विद्युत तरंग अभियांत्रिकी
बहुयामी शिक्षा मानविकी
सजग राष्ट्र की आरती
जय सरस्वती जय भारती ।।

करें सम्मान गुरू दीक्षा का
जीवन के उच्च आदर्शों का
सूर्य उदय हो ज्ञान तत्व का
रहे धरा निहारती
जय सरस्वती जय भारती ।।

सृजन गीत से करें याचना
नव निर्माण राष्ट्र कामना
कर्मठ जीवन व्रत उपासना
धरती यही गुहारती
जय सरस्वती जय भारती।।

करें 'कन्हैया' का आराधन
ज्ञान भक्ति अरू शक्ति वर्धन
कर्मयोगी 'ईश्वर का सुमिरन
धरा सृष्टि उर वारती
जय सरस्वती जय भारती।।

विषय सूची

क्र० सं०	रचना का शीर्षक	प्रशिक्षु का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	--	i - vi
2.	सम्पादकीय	--	vii
3.	The Editor's Pen	--	viii
4.	शिक्षा विभाग	--	ix
5.	बी० एड० परिषद	--	x
6.	बी० एड० प्रशिक्षु	--	xi-xiii
	हिन्दी अनुभाग		
7.	भारतवर्ष महान	आकांक्षा	1
8.	औरत	आकांक्षा जौहरी	1
9.	हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी	आँचल तोमर	2
10.	क्या मैं इंसान नहीं?	एकता सैनी	3
11.	जिंदगी	बिनीता रावत	4
12.	चन्दा से पूछा है मैंने	ज्योति उपाध्याय	4
13.	हम सब मिलकर बनायें	आकांक्षा	5
14.	मंजिल पथ	मनीषा प्रजापति	6
15.	भ्रष्टाचार	नीति देवी	6
16.	एक पंछी सा मैं	राधा	7
17.	माँ हिन्दी	आदर्श भारद्वाज	7
18.	बदलते परिवेश में शिक्षक की....	नेहा	8-9
19.	प्रतीक्षारत	आदर्श भारद्वाज	10
20.	शिक्षा	अजय पोषवाल	10
21.	देश जगत की सोच बदलना	अदिति	11
22.	सच्चाई	रिद्धि शर्मा	11
23.	प्रेरणादायक	अनुराधा	12
24.	बचपन	शिवानी कुमारी	12
25.	माँ की लाडली मेरी बहन	संतोषी चौहान	13
26.	शिक्षा	अजय पोषवाल	13
27.	मुझको ठेकेदार बना दो	सविता कश्यप	14
28.	एक छोटी सी परी	शिवाली सिंह	15
29.	दृढ़ निश्चय	शिवानी शिवा	16

विषय सूची

क्र० सं०	रचना का शीर्षक	प्रशिक्षु का नाम	पृष्ठ संख्या
30.	मानवता की शान	संदीप कुमार	16
31.	लक्ष्य से तू ना विचलना	शुभम कुमार	17
32.	पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी	उर्वशी चौधरी	18
33.	हमारा प्यारा पर्यावरण	दीपक कुमार	19
34.	सत्य का महत्त्व	मो० तारीक	20
35.	विश्वास	सन्तोष कुमार	20
36.	अनभिव्यक्त	आदर्श भारद्वाज	21
37.	जिंदगी	सत्यम	21
38.	अभिनंदन	अजय कुमार	22
39.	बेटी	शुभंम	22
40.	कुछ सपनों के मर जाने से....	सलमान	23
41.	कोरोना वायरस	एकता सैनी	24
42.	कुर्सियाँ औरतों को तरसती हैं....	शिवम चौहान	25
43.	मंजिल	विक्की	26
44.	माँ	योगेश कुमार	26
45.	मेरी कलम से	स्वाति देवी	27
46.	छोटी सी उम्मीद	विकास	28
47.	समानता क्या है?	विश्वास चौधरी	29
48.	Online Classes और हम..	संतोषी चौहान	30-32

English Section

49.	Swami Vivekanand....	Chanchal	33-34
50.	A New Champion	Sanjay Singh Mehta	35-36
51.	The obstacle in our path	Anjali	37
52.	My dear college	Santoshi Chauhan	38
53.	Role of Technology in Covid 19	Gulshera Khan	39-41
54.	Career Awareness	Amit Kumar Singh	42-43
55.	+ve Attitude and Necessity	Mayank Gupta	44
56 .	Women Safety in India	Abhishek Kumar	45-46
57.	Glimpses of B.Ed. 2019-21	--	47-65
58.	विशेष - कमरा नंबर 5	ज्योति उपाध्याय	70-71

संदेश

डॉ० एम० पी० सिंह
(प्राचार्य)

एक शिक्षण संस्थान अपने विद्यार्थियों के लिए उन सभी अनुभवों को प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए प्रयत्नशील रहता है, जिन का अनुप्रयोग विद्यार्थी अपने भावी जीवन में कर सके। हमारा संस्थान के० एल० डी० ए० वी० (पी० जी०) महाविद्यालय, रुड़की भी शिक्षा के क्षेत्र में अपने सभी उत्तरदायित्वों के निर्वहन में संलग्न है तथा निरंतर विद्यार्थियों के हित में कार्यरत रहता है।

पाठ्यक्रम गतिविविधियों के साथ-साथ विविध पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों की छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करने का प्रयास किया जाता है। इसी श्रेणी में शिक्षा विभाग के प्रशिक्षुओं द्वारा विभागीय पत्रिका का सम्पादन कार्य प्रत्येक सत्र में करवाया जाता है। कार्य की सम्पन्नता सुनिश्चित करने हेतु परिस्थितियों के अनुरूप कार्य-पद्धति में रूपांतरण भी किया जाता है।

यह बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय के बी० एड० प्रशिक्षुओं द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्र २०१९-२१ हेतु "नया क्षितिज" का संपादन किया जा रहा है। कोरोना महामारी के दौरान आई प्रतिकूल परिस्थितियों में पूरा देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व कहीं ना कहीं अवसाद ग्रसित रहा है। वहीं इस कठिन समय में भी प्रशिक्षुओं द्वारा अदम्य रूप से दिखाया गया धैर्य तथा अपने कार्य के प्रति अनन्य उत्साह अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

शिक्षा विभाग के समस्त अध्यापकगण तथा प्रशिक्षुओं की मेहनत के परिणामस्वरूप ये नया क्षितिज वास्तव में सभी के जीवन मे नया सवेरा लेकर आएगा। इसी शुभेच्छा के साथ समस्त संपादक मंडल, अध्यापकगण तथा प्रशिक्षुओं को बधाई और आने वाले वर्षों में सफलता हेतु शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

संदेश

डॉ० यशोदा मित्तल
(प्राचार्या)
(सेवनिवृत अक्टूबर 2021)

विद्या को भारत में सर्वदा से ही व्यक्तित्व उन्नयन का आधार माना गया है, यह न केवल साधन है अपितु साध्य है जो प्रत्येक क्षण मनुष्य को उच्चता की ओर अग्रसर करती है। यजुर्वेद में कहा भी गया है कि विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है - "विद्ययामृतष्नुते"। शिक्षा ही मानव को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर व मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है और निर्देशित करती है। शिक्षा ही मानव जीवन में उदात्तता, उच्चता और उत्कृश्टता लाती है।

शिक्षा एक अनवरत प्यास है, जिसको तृप्त करने के लिए सदैव ज्ञान के नए क्षितिज की तलाश में आगे बढ़ते रहना होता है। इस ज्ञान-क्षितिज की यात्रा में शिक्षा व्यक्ति को प्रतिक्षण संघर्षों के साथ साहस से लड़ने हेतु स्वः अभिप्रेरित करती है और उसे जीवन के अद्वितीय अनुभव प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभूतपूर्व विकास करने के साथ ही उसके आत्मविश्वास को एक नया आयाम प्रदान करती है। जिस से वह अपने साथ-साथ अपने समाज व राष्ट्र के हित में अपना योगदान देता है। एक शिक्षक तो स्वयं में ही राष्ट्र के निर्माण की धुरी होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक प्रशिक्षु शिक्षा के क्षेत्र में उच्च मापदंडो को स्थापित करेंगे।

हर्ष का विषय है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कॉलेज के शिक्षा संकाय की वार्षिक पत्रिका 'नया क्षितिज' सत्र 2019-21, का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका को गौरवमयी व सार्थक बनाने हेतु मैं सम्पादक मण्डल को बढ़ाई देती हूँ।

प्रस्तुत अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

संदेश

विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य ।
कांचनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् ॥

डॉ० पूर्णिमा श्रीवास्तव
(विभागाध्यक्षा)

अर्थात विद्यावान और विनयी मनुष्य सभी का चित्त हरण(आकर्षित) कर लेता है, जैसे सुवर्ण और मणि का संयोग सबकी आँखों आँखों को सुख देता है।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कन्हैयालाल डी.ए.वी. (पी ०जी०) कॉलेज का अध्यापक शिक्षा विभाग विगत वर्षों की भॉति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका 'नया क्षितिज' का सफल प्रकाशन करने जा रहा है।

महर्षि अरविन्द का मानना था कि **"अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के माली होते हैं जो संस्कृति की जड़ों में खाद डालते हैं और उन्हें अपने श्रम से सींचकर महाप्राण शक्तियां बनाते हैं।"** प्रस्तुत प्रत्रिका के इस अंक के माध्यम से मैं अपने भावी शिक्षकों को जीवन पथ पर पूर्ण निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता के साथ आगे बढने का संदेश देती हूँ। मार्ग कितना ही दुर्गम क्यों न हो मानव उस पर चल कर अपनी मंजिल तक पहुंच ही जाता है। वर्तमान समय में जब कोरोना प्रभाव के कारण जो प्रतिकूल परिस्थितियाँ चहुंओर हैं, आशा की किरण के रूप में हमारे भावी अध्यापक अपनी रश्मि किरणों के द्वारा पूरे जगत को जगमगायेगें।

यह सर्वविदित है कि **"आवश्यकता ही अविष्कार की जननी होती है।"** मनुष्य ने आवश्यकता पडने पर असम्भव को भी संभव कर दिखाया है। मेरा यही संदेश है कि मेरे विद्यार्थी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के द्वारा किसी भी असम्भव प्रतीत होने वाले लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। स्वामी विवेकानन्द जी की निम्नाकिंत पंक्तियाँ अक्सर मुझे स्मृत हो जाती हैं-

"नीति परायण धुन के पक्के बनो, तुम्हारे नैतिक चरित्र में कहीं एक धब्बा तक न हो, मृत्यु से मुठभेड़ करने की हिम्मत रखो। सत्य का अनुसरण करो, फिर वो तुम्हे चाहे जहॉं ले जाये, प्रत्येक भाव को उसके चरम सिद्धांत तक ले जाओ।" यही भाव यही सकारात्मक ऊर्जा मैं अपने विद्यार्थियों को देना चाहती हूँ।

अंत में मुख्य संपादक के साथ-साथ सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को इस अंक को प्रकाशित करने के लिये साधुवाद देते हुये हार्दिक शुभकामनायें प्रदान करती हूँ, सुखद भविष्य की कामनाओं के साथ।

Message

डॉ० मेघा जुयाल

I am delighted to write this message for the B.Ed. magazine which is published annually by the meticulous efforts of Teacher Education department. As, I have noticed over the years that this magazine provides a platform for the students to express their thoughts, innovative and unique ideas and also helps to bring about the hidden talents in the students.

I am sure that this magazine would be instrumental to develop the writing skills of students, which is now recognized as a very important attribute in today's world of shortcut communication. Also, they would be able to communicate their thoughts and plan of action regarding the prevailing pandemic caused by novel COVID-19.

I wish the editorial team of the magazine and the B.Ed. family a huge success.

With best wishes,

Message

Mantra of Learning

डॉ० मनोज कुमार शर्मा

It is real that learning never stops, this comes true during the hart time of lockdown due to COVID-19. It shows that every experience to life acts as a teacher for all of us. These learning experiences play a very important role in bringing behavioural changes the personality of an individual. Learning has no boundaries similarly technology has no boundaries.

At least those who were not aware of technologies that how important it is, or they were not using technology in their life as much, now they are using it for learning new things in their life for their betterment and it is the demand of the situation. Who so ever is not adopting it or not coping with it, is going to lose a major part of learning in his/her life. It is the situation which also plays an important role in learning new concepts. Who had ever thought of it that the day will come when we all hide ourselves within a boundary of four walls for a long period of time. During this hard time, we have one tool in our hand by which we can not stop ourselves from learning and that is Technology.

I mean to say in every situation we have something to identify which gives us new experiences in the form of learning. It is our intuition or interest or zeal for learning which helps to identify such factors to gain new experiences. Always work hard to get such factors out of situation instead of cursing the situation, that is the only mantra of learning.

संदेश

डॉ० मोनूराम

यह हम सभी के लिए हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भाँति के० एल० डी० ए० वी० (पी०जी०) कॉलेज, रुड़की के शिक्षा विभाग की वार्षिक पत्रिका नया क्षितिज का प्रकाशन होने जा रहा है। मेरी शुभकामनाएँ सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल एवं मुख्य सम्पादक के लिए हैं जिनके अथक प्रयास से यह कार्य सम्भव हो पाया है।

ज्ञान के निस्सीम नभ पर उड़ सकूं मैं,
चेतना के पंख किन्तु कौन देगा।
इन्द्रधनुषी विश्व कोई रच सकूं मैं,
कल्पना के रंग किन्तु कौन देगा।

मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ, कि मैं स्वयं भी इस विभाग का अंग हूँ जो प्रतिवर्ष अपने विभाग की विभिन्न प्रतिभाओं को प्रकट करने के लिए नया क्षितिज नामक मंच प्रदान करता आ रहा है। जहाँ पर हमें सृजनात्मक एवं उत्कृष्ट रचनाएं प्राप्त होती हैं, जिन्हें पढ़कर हृदय भाव विभोर हो जाता है और हम चाहते हैं कि इस पत्रिका के माध्यम से अपने विद्यार्थियों की प्रतिभा को जन-जन तक पहुंचाते रहें। इसी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर नया क्षितिज एक सार्थक कदम है।

शुभकामनाओं सहित...

सम्पादक की कलम से

डॉ० अम्बिका भट्ट

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व-विकास की प्रक्रिया है, जिस में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्वीकारी गई है। इस प्रक्रिया में शिक्षक का दायित्व विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य अवसरों का सुव्यवस्थित संयोजन निर्मित करना रहा है।

इन अवसरों से युक्त पर्यावरण में ही विद्यार्थी अपने ज्ञान एवं कौशलों का प्रदर्शन करने में सक्षम हो पाता है। एक शिक्षक अवसरों की विविधता विद्यार्थी के लिए उपलब्ध करवाता है, इस के लिए आवश्यक है कि वह स्वयं भी इन विविध क्षेत्रों का अनुभवी हो, अपने प्रशिक्षण काल में उसने विविध क्षेत्रों का अनुभव प्राप्त किया हो।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उनकी अभिव्यक्ति के प्रस्तुतीकरण एवं पत्रिका सम्पादन के विविध पक्षों का ज्ञान प्रदान करने हेतु शिक्षा विभाग प्रत्येक सत्र के प्रशिक्षुओं द्वारा पत्रिका **"नया क्षितिज"** का सम्पादन करवाता है। जो कि कोरोना प्रभाव में होने के कारण विगत वर्ष की ही भांति इस वर्ष भी online पटल पर सम्पादित एवं प्रकाशित हो रही है।

अतः सभी प्रशिक्षुओं को उनकी सत्रीय पत्रिका "नया क्षितिज २०१९-२१" के सफलतम सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं आशा करती हूं कि अपने इस अनुभव का वो अपने कार्यक्षेत्र में अवश्य लाभ उठायेंगे ।

The Editor's Pen

You have in your hand, “ Naya Kshitij” , K.L. D.A.V. (PG) college, Teacher-Education department's official magazine. It captures the momentous moments of B.Ed.’s journey till so far. We have tried our best to make sure this memory of the he B.Ed.’s session 2019-21 helps you in recapitulating your eventful journey in B.Ed..

"Naya kshitij” is a compilation of the immense efforts put forwarded by the invincible B.Ed. students and is also a specimen of their creativity. It tries to bind together each and every aspect of our very own B.Ed. family. This is the another splendid B.Ed. session with our students bringing laurels to the College in all possible spheres. Their achievements were so vivid that all our efforts to include their accomplishments in one compilation went in vain.

Isn’t it rightly said, “ A flower makes no Garland”, thus this magazine is not the outcome of the efforts put in by an individual but also the immense effort put forwarded by, first and foremost, our teachers of the department and then the Editorial board, and dear B.Ed. students.

This is just a small tribute to our K.L. D.A.V (PG) college who gave me the opportunity to study from here and also would like to thank for making me work as an chief editor of Teacher-Education department, session 2019-21 magazine, “Naya khsitij”.

From the behalf of editorial team I would like to pay my gratitude to ‘The Principal, Dr. M. P. Singh', Head of the Teacher-Education Department, 'Dr. Purnima Shrivastava’, Dr. Megha Juyal, Dr. Manoj Kumar Sharma, Dr. Ambika Bhatt and Dr. Monuram.

We apologies for any shortcomings and hope you will cherish our efforts. Happy reading and ' Au revoir ' K.L. D.A.V. (PG) College, Roorkee.

Thank you !

Department of Teacher Education

Head of the Department & Associate Professor

Dr. Purnima Srivastav

Assistant Professor

Dr. Megha Juyal

Dr. Manoj Kumar Sharma

Dr. Ambika Bhatt

Dr. Monuram

Supportive Staff

Shri Subhash Thakur

B.Ed. Students' Council

General Secretary

Adarsh Bhardwaj

Cultural Secretary

Swati Devi

Salman

Game & Excursion Secretary

Urvashi

Vishwas

Finance Secretary

Ekta Saini

Ajay Kumar

Literary Secretary

Jyoti Upadhyay

Shivam Kumar

"नया क्षितिज" 2019-21 Magazine Editor

Santoshi Chauhan

B.Ed. Trainees

Akansha

Aakansha Johari

Aanchal

Aditi

Anjali

Binita Rawat

Chanchal

Ekta Saini

Gulshera

Jyoti Upadhyay

Anuradha

Shivani Kumari

Manisha

Neha

Niti

Radha

B.Ed. Trainees

Riddhi

Santoshi

Savita

Shivali

Shivani Shiva

Swati

Urvashi

Abhishek

Adarsh

Ajay Kumar

Ajay Kumar

Amit Singh

Deepak

Mayank

Mohd. Tarik

Salman

B.Ed. Trainees

Sandeep

Sanjay Mehta

Samtosh

Satyam

Shivam

Shubham

Vickey

Vikas

Vishwas

Yogesh

हिन्दी अनुभाग

भारतवर्ष महान

भारत वर्ष महान्!सिन्धु हिमालय है शान
रंग रूप भाषा का भेद नहीं
गंगा यमुना सरस्वती का मेल यही है
चारों दिशाओं में हैं चारों धाम
पन्च सरोवर का है यह स्थान
भारतवर्ष महान्! सिंधु हिमालय है शान
ईर्ष्या तृष्णा द्वेष यहाँ नहीं है
राम कृष्ण की जन्म भूमि यही है
सप्त नदियों का यहाँ है संगम
विभिन्न धर्मो में है एकता बंधन
भारतवर्ष महान्! सिंधु हिमालय है शान
विद्वान बन्धुओं की कमी नहीं है
जंगल और मरुभूमि भी यही है
पग-पग पर बिखरे विभिन्न रंग
जिनसे मिलकर बना है जीवन
भारतवर्ष महान्! सिंधु हिमालय है शान

आकांक्षा (स्वरचित)

औरत

औरत एक बेटी, बहन, पत्नी, मित्र और माँ है
अपने हर रूप में वो शख़्सियत कमाल है
वो मूर्ति है धैर्य और सहनशीलता की
पर कभी दुर्गा तो कभी काली अवतार है
लगता है जैसे हुआ देवी से साक्षात्कार है
हृदय में उसके प्रेम अपार है
रखती सबका बेहद ख़याल है
पर उसे अपना कहाँ ध्यान है
कहते क्यूँ है कि वो है त्याग की प्रतिमूरत
क्या उसके नहीं कोई अरमान हैं
कई सदियाँ गुज़री दुनिया के इन सब झमेलों में
देखो! अब उसको आया नया विचार है
अपनी पहचान बनाने को किया कुछ ऐसा काम है
कभी प्रशासक तो कभी मंत्री बन
"समाज" में रखा अपना मान है
जंज़ीरों को तोड़कर हर पद पर अब शोभायमान है
हाँ! वो एक बेटी, बहन, पत्नी, मित्र और माँ है।

आकांक्षा जौहरी (स्वरचित)

हमारी राष्ट्रीय भाषा हिंदी

भारत के हृदय का भाव हो तुम,
हिंदुस्तां की आवाज हो तुम।
तुमसे ही सभी हुए साक्षर,
इस राष्ट्र का आधार हो तुम।

मनोभाव साकार हुए तुमसे,
साहित्य रचे इतिहास लिखा,
मानव किससे कहो सभ्य बन।
किया हर भाषा को आत्मसात,
भारत की तरह शरणागत हो।।

आस्तित्व बिना तेरे है कहाँ?
जिसने तेरा सम्मान किया,
प्रेमचंद, द्विवेदी, प्रसाद, पंत,
महादेवी, निराला और है अनंत,
सबको कहा किसने समर्थ किया।।

विस्मृत कर तुमको जो भी गए,
वो क्या विकसित हो पायेंगे,
जड़ से कटकर भी वृक्ष कभी
क्या हरे भरे रह पाएं है।
उठो जागो संकल्प करो,

विकसित करके निज भाषा को,
भारत की शान बढ़ायेंगे,
हिंदी भाषी कहलायेंगे
हिंदी भाषी कहलायेंगे।

आंचल तोमर (स्वरचित)

क्या मैं एक इंसान नहीं....

क्या मै एक इंसान नही?
फिर क्यूँ मेरी पहचान नही?
जब जन्म दिया है उसी ईश्वर ने......
फिर क्यूँ मेरा कोई सम्मान नही?

जब भी मैंने आगे बढ़ाया कदम.....
लोगो ने किया मेरा तिरस्कार।
लैंगिकता जब पता चल गई तो...
अपनो ने ही किया मेरा बहिष्कार

जन्म किसी और रूप में मिला तो क्या जीने का मुझे नहीं है अधिकार
आगे बढे बिना ही हार मान लूँ....ये बात बस मुझे नहीं है स्वीकार।।

पढ़ने गया तो मेरा मजाक उड़ाया गया....
बड़े ही अभद्र नामों से मुझे पुकारा गया।।
मेरे अपने साथियों ने मेरा किया बलात्कार....
शायद यही मिले थे उन्हें संस्कार...

कई रोज मौत को गले लगाना चाहता था ।।
लेकिन हर बार रहा मैं नाकाम।
शायद ईश्वर की भी इच्छा थी
आगे बढ़ूं और हासिल करुँ मै अपना मुकाम।।

जब नौकरी की तलाश में निकला,,
तो काबिल होने पर भी मुझे दुत्कारा गया........
आवाज़ उठाने की कोशिश की तो,,,
लाठी-डंडो से मुझे मारा गया।।

मौका देकर तो देखो, ना कर सकू ऐसा कोई काम नहीं।।
तुम्हीं मे से एक हूं, मै भी कोई गैर नहीं।।
जब जन्म दिया है उसी ईश्वर ने
फिर क्यूं मेरा सम्मान नहीं।।
क्या मै एक इंसान नहीं ??
फिर क्यूं मेरी पहचान नहीं?

एकता सैनी (स्वरचित)

जिंदगी....

जिंदगी तूफानों से भरी
कश्ती जिसकी लहरों में फंसी
जाने कैसे मिलेगा इसको किनारा
जाने कौन बनेगा इसका सहारा

थाम के इस कश्ती को बढ़ रही हूं आगे
जाने फिर भी क्यों है मन में एक अजीब सी उलझन
की होने वाली अनहोनी का क्या होगा अंजाम
क्या मिल पाएगा इस कश्ती को इसका सही मुकाम

अब मन में संकल्प लिया है
जाना है उस पार
हर लहरों से लड़ झगड़ कर , लगाना है कश्ती को पार

बिनीता रावत (स्वरचित)

चंदा से पूछा है मैने.....

ऊपर से धरती कैसी है?
मेरी आंखों के जैसी है?
क्या रंग बिरंगी दिखती है ?
या बद्रंगी सी लिपटी है ?
छुपे है क्या क्या राज सलोने चंदा से पूछा है मैने ।

गोल है या समतल है ?
पानी गिरता क्या छलछल है?
हरियाली सुहाती है ?
या माटी की ही मूरत है ?
दिखते है कैसे सब नगीने चंदा से पूछा है मैंने।

इन्सान नजर उसे आता है ?
या राक्षश सा चिढ़ाता है ?
पेड़ है या सब काट लिए ?
हवा बेहती है क्या धुआ लिए ?
स्व काल बना क्यों इन्सान ये , चंदा से पूछा है मैंने।

ज्योति उपाध्याय (स्वरचित)

हम सब मिलकर बनायें.....

हम सब मिलकर बनायें
इस धरती को स्वर्ग
न काटें जंगल हम
और न बनायें बंजर जमीन
साजिश को रोक के हम
ज्योत ज्ञान की घर-घर जगायें
हम सब मिलकर बनायें

पशुओं के लिए चारा
ईंधन के लिये लकड़ी
खिसकती चट्टानों पर
पेड़ो को हम लगायें
हम सब मिलकर बनायें

जंगल पूरी करते
हमारी सभी आशाओं को
फ़िर भी ना जाने क्यों?
काटते इन प्राण दाताओं को
पहाड़ी चट्टान की तरह
मन में दृढ़-संकल्प लायें
हम सब मिलकर बनायें

उद्योगो को ना रोकें
लेकिन पेड़ों को काट कर
अन्धा धुन्ध आज हम
धरती उजाड़ ना बनायें
हम सब मिलकर बनायें

प्रलयकारी बाढ़ को
रोकते हैं जंगल
सूखी और प्यासी धरा पर
मेघों को बरसाते जंगल
प्रयासों से बात ना बने
तो मिलकर आन्दोलन चलायें
हम सब मिलकर बनायें

पथिकों की राहों को
छाया भरी हम बनायें
जब तपता हुआ सूरज
हर दिशा से निकल आये
हम सब मिलकर बनायें
इस धरती को स्वर्ग!!

आकांक्षा (स्वरचित)

मंजिल पथ........

जब नाव जल में छोड़ दी
तूफ़ान में ही मोड़ दी
दे दी चुनौती सिंधु को
फिर धार क्या मझधार क्या
कह मृत्यु को वरदान ही
मरना लिया जब ठान ही
फिर जीत क्या फिर हार क्या
जब छोड़ दी सुख की कामना
आरंभ कर दी साधना
संघर्ष पथ पर बढ़ चले
पिर फूल क्या अंगार क्या
संसार का पी पी गरल
जब कर लिया मन को सरल
भगवान शंकर हो गए
फिर राख क्या श्रृंगार क्या

मनीषा प्रजापति (स्वरचित)

भ्रष्टाचार ....

हे भगवान! कर दो कुछ ऐसा काम,
ये दुनिया बनाने जाए फिर से सतयुग जैसी महान

न चले लोग झूठ की राह पर,जहाज है सिर्फ काटे,
इस धरा पर लोगो ने,स्वयं को चार भागो मे बांटे।

ऐसे चार भाग जिन्हे लोगो ने दिए ये नाम,
कोई हिन्दू, कोई सिख,कोई ईसाई, तो कोई मुसलमान ।

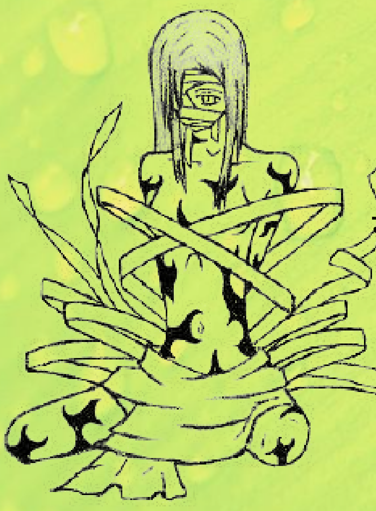

मै जाने क्यों इन्सानियत को चार भागो मे बांटकर भूल जाते है लोग,
अपने ही हाथो से अपनो का गला दबाते है लोग ।

क्यो कलयुग मे कुछ पैसो के लिए भाई-भाई को मार डालते है,
ऐसे कुछ भाइयो और राजनेता ने ही तो,
मिलकर जन्मा है ये व्यापक भ्रष्टाचार ।।

नीति देवी (स्वरचित)

एक पंछी-सा मैं ....

एक पंछी-सा मैं
मन में लिए एक अनकहा शोर ,
उड़ जाऊँ एक छोर से दूसरे छोर...
पंख फ़ैलाऊँ अपनी उड़ान की ओर ,
करूँ सपने पूरे पकड़ कर जरूरतों की डोर...
ख्वाहिश का छूकर आसमान,
करूँ सितारे सपनों के कुछ अपनी ओर..
एक पंछी- सा मैं
मन में लिए एक अनकहा शोर ,
उड़ जाऊँ एक छोर से दूसरे छोर...
लाख तूफ़ान आयें पर ,
ये पंख ना थमेंगे अपनी उड़ान छोड़..
क्योंकि ये है मेरी अपनी दौड़,
जिसमें न किसी की होड़...
एक पंछी- सा मैं
मन में लिए एक अनकहा शोर ,
उड़ जाऊँ एक छोर से दूसरे छोर...

राधा (स्वरचित)

माँ हिन्दी....

नानक कबीर मीरा तुलसी के
कंठ का अविरल गाँ बनी
भारतेन्दु के सृजित बीज से
वृक्ष विशाल महान बनी

प्रेमचंद के मर्म को छूकर
तुमने ममता पाई है
और सुभद्रा की वाणी से
कीर्ति शक्ति की गाई है

मैथिली माखन महादेवी मंटो
से पंत निराला तक
मानवता के अभिवर्धन को
मुक्त कंठ गुणगान बनी

संस्कृत की कनिष्ठ पुत्री तुम
नाव साहित्य की अम्बा हो
अंग्रेजी है मेरी प्रेम प्रिया तो
हिन्दी तुम मेरी माँ हो ।

आदर्श भारद्वाज (स्वरचित)

बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका.....

शिक्षक के महिमामंडित युग की समाप्ति के बाद शिष्य और शिक्षक के बीच संबंध और शिक्षक की भूमिका विद्यालयों के स्तर और इन दोनों के सामाजिक स्तर के आधार पर बदलती रही है।आज तकनीकी विकास के इस आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका पहले जैसी नहीं रह सकती,बदलते परिवेश में समय और जीवन की मांगों के अनुसार उसमें बदलाव आना स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी।

एक बच्चे के जीवन में शिक्षक का आचार–व्यवहार तथा उसके प्रति शिक्षक का रूप अत्यंत महत्वपूर्ण है। कक्षा का वातावरण सुखद, हल्का-फुल्का और बच्चे की सीखने की क्षमता को बढ़ाने वाला बनाए रखने में शिक्षक का प्रमुख हाथ होता है। सफलता-असफलताओं,अच्छे से बहुत अच्छे नतीजों पर जोर आदि मानव छात्र की आंतरिक सुरक्षा भावना व आत्म सम्मान के विपरीत नहीं होने चाहिए। माता-पिता व शिक्षक का व्यवहार बच्चे की मानसिकता को गहरा प्रभावित करता है। उनके लिए सब कुछ सबसे अच्छा देते रहने की चिंता में बच्चे के स्वयं के रुझान, रुचियां, विचार , पसंद ना पसंद वह सोच पीछे छूट जाते हैं।जो शिक्षक बच्चे की असफलता पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं वह उसे बद से बदतर बनाने का काम करते हैं। दूसरे शिक्षक जो सकारात्मक ढंग से समस्या का समाधान कर पाते हैं वह बच्चे में भी ऐसा रुख विकसित करते हैं जो केवल सफलता वह असफलता से ऊपर बच्चे की मानसिकता के स्वस्थ विकास में सहायक होता है।बच्चे को उसकी असफलता की याद दिलाते रहने की बजाय उसमें यह अहसास पैदा करने की जिम्मेदारी शिक्षक की है कि वह महत्वपूर्ण है और सब काम करने की क्षमता रखता है। आने वाले समय में शिक्षक को एक अलग तथा अत्यंत जटिल व चुनौतियों से भरी भूमिका निभानी पड़ेगी। यह भी हो सकता है कि अध्यापक पर छात्र की निर्भरता धीरे-धीरे कम होती चली जाए। आज टेलीविजन, कम्प्यूटर, ई-लर्निंग, वीडियोकॉन्फ्रंसिंग आदि आधुनिक उपकरणों और विधियों के द्वारा शिक्षण क्रिया में ज्यादा से ज्यादा जगह हत्या लेने की संभावना बढ़ रही है।

आज पढ़ने पढ़ाने के रुझानों से पता चलता है कि अब अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य होनर में दक्षता प्राप्त करना, तकनीकी अविष्कारों व नवीन प्रणालियों का अनुसरण करते रहना आवश्यक हो जाएगा। दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था (distance education) के विकास से भी कक्षा में समय बिताने की जरूरत में कमी आएगी। क्या इन सब से

शिक्षक के कार्य और महत्व में भी कमी आएगी? परीक्षा का प्रारंभ पर एक महत्व कम होने पर क्या शिक्षा की सत्ता कम हो जाएगी? निश्चय ही बदली परिस्थितियों में शिक्षक की भूमिका भी बदलेगी। शिक्षक को भाभी मनुष्य व समुदायों के बीच परपरस्परबेहतर समझ बढ़ाने,विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने में भूमंडलीकरण के बाहर की नई भूमिका में उतरना होगा।

शिक्षक, शिष्य और विषयवस्तु तीनों के बीच संबंध सरल,सहज और सुसंगत होने चाहिए। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका पढ़ाने के साथ-साथ पढ़ने की ओर सीखने की भी है।ज्ञान पुस्तकों से प्राप्त किया जा सकता है परंतु ज्ञान की पिपासा केवल व्यक्तिगत संपर्क से बढ़ती और शांत होती है।Henry Van dyke के अनुसार,” शिक्षक यह व्यक्ति है जो सोई हुई आत्मा को जगाता है, सुस्त को चुस्त बनाता है, उत्सव को उत्साहित करता है,आस्थिर को स्थिर और संतुलित करता है। साथ ही जो सीखने के अपने सुख को अपने छात्रों तक पहुंचा सकता है, वह अनेक दीप प्रज्वलित करने का कार्य करता है।“

बच्चे के भावनात्मक विकास में शिक्षक का महत्व बहुत ज्यादा होता है। छोटे बच्चों की भावनाएं निरंकुश होती हैं, वह चाहे खुशी में आनंद की अभिव्यक्ति हो अथवा क्रोध, ईर्ष्या व चिंता जैसी अप्रितिकर भावनाएं हो।ऐसे में शिक्षक का यह जानना बहुत जरूरी है कि भावनाएं जीवन के प्रेरक शक्तियां हैं और इन शक्तियों को सही दिशा में मोड़ ना बच्चे के हित के लिए आवश्यक है। शिक्षक को उन साधनों और उपायों की खोज करनी होगी जो बच्चों की असीम उर्जा को सृजनात्मकता की ओर मोड़ सके।

नेहा (स्वलिखित)

प्रतीक्षारत ....

सारा वैभव लुटाकर भी वंचित रहे
बोझ भूमि सा सहकर भी मृदु चित रहे
जिसने ख़ुद को बहाकर भी सींचा हमें
उसने हमसे उपेक्षा के सब दुःख सहे

जिसने शब्दों में दी बोलने की समझ
स्नेह से ना कभी बात उनसे कही

व्यर्थ प्रश्नों में उलझें रहे हम सदा
उत्तरों को हमारी प्रतीक्षा रही

एक पिता को समर्पित ♥

आदर्श भारद्वाज (स्वरचित)

शिक्षा..

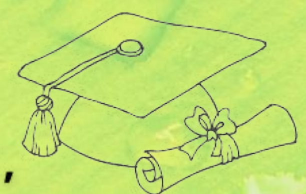

शिक्षा जीवन के लिये ,
तैयारी करना नहीं होता।
बल्कि यह तो खुद ही एक जीवन है।।

अजय पोषवाल

देश जगत की सोच बदलना

देश जगत की सोच बदलना
परिवेश बदलना।

ना हो धर्म मजहब की दीवारें
भाषा वसन की जंजीरें
लहू के रंग को झुठलाए
एक ऐसी कट्टर सोच बदलना
देश जगत की सोच बदलना
परिवेश बदलना।

मन के गहन तिमिर अंधक में
ज्ञान बोध का दीप जलाएं
सब में ईश्वर ही दिखलाएं
एक ऐसा हम पंथ चलाएं
होगा मन मस्तिष्क बदलना
देश जगत की सोच बदलना
परिवेश बदलना।

थके हुए बोझिल कंधों पर चलती है सारी दुनिया
मासूमों के सपने रोज कुचलती चलती है सारी दुनिया
घर की चारदीवारी में मरती है दुनिया की जननी
होगा सोच विचार बदलना
देश जगत की सोच बदलना
परिवेश बदलना।

अदिति (स्वरचित)

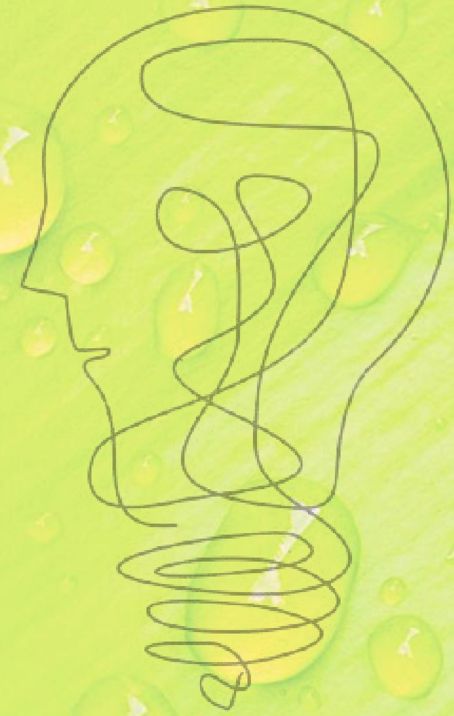

सच्चाई

अब एक नई जंग जारी है, मुझे बस तारीफ पानी है।
ना जाने कैसी घुमारी है, लाइक्स की दुनिया जो जारी है।
अनजान लोगों से यारी है, जो उनको सुनने की ठानी है।
भूल गए वो बचपन की वाणी है, नज़रो मैं जिनकी हम रानी है।
फिर भी ये कैसी नादानी है, पहचान उनसे ही पानी है।

खुद को अब तक पहचानी नही हूँ, दूसरों की जुबानी भी मानी नहीं हूँ।
ज़िंदगी आसान हो जानी है, असलियत से तेरी यारी हो जानी है।
संभलकर तुमको चलना यही है, गिरकर भी तुमको उठना यही है।
सच्चाई से बेहतर वाणी होती नही है, बातें भी ऐसी होती नही है।
समस्या भी सारी सुलझ जानी है, मन में कोई बात ना ठहरानी है।
ना जानने की कोई ख्वाहिश ही होगी, ख्वाहिशो मैं जब दुनिया ये होगी।
दो लम्हो से ज्यादा तो कुछ भी नही है, एक हक़ में है एक मैं नही है।

ज़िंदगी की तो बस यही कहानी है,जो तुझको मुझे सुनानी है।
बुरा तो कुछ कभी होता नही है, समझ लो तुम ऐसा भी तो नही है।
कोशिश करोगे, समझ जाओगे समझने जैसा कुछ होता नही है।
जो जैसा है वैसा ही तो अच्छा है, जो जैसा है वैसा ही तो अच्छा है,
सच्चाई हो तो कोई न समस्या है सच्चाई हो तो कोई न समस्या है।।

रिद्धि शर्मा (स्वरचित)

सत्यमेव जयते

प्रेरणादायक..

एक बार बादलों की हड़ताल हो गयी. बादलों ने कहा अगले दस साल पानी नहीं बरसायेंगे .ये बात जब किसानों ने सुनी तो उन्होंने अपने हल वगैरह पैक कर के रख दिये लेकिन एक किसान अपने नियमानुसार हल चला रहा था.कुछ बादल थोड़ा नीचे से गुजरे और किसान से बोले क्यों भाई पानी तो हम बरसायेंगे नहीं तो फ़िर क्यों हल चला रहे हो? किसान बोला कोई बात नहीं जब बरसेगा तब बरसेगा लेकिन मैं हल इसलिये चला रहा हूँ कि मैं दस साल में कहीं हल चलाना न भूल जाउं. अब बादल भी घबरा गये कि कहीं हम भी बरसना ना भूल जाये. तो वो तुरंत बरसने लगे और उस किसान की मेहनत जीत गयी .जिसने सब कुछ पैक कर के रख दिया वो हाथ मलते ही रह गये. इसलिए लगे रहो भले ही परिस्थितियां अभी हमारे विपरीत हैं ,लेकिन आने वाला समय नि:सन्देह हमारे लिये अच्छा होगा।

नैतिक शिक्षा -कामयाबी उन्हीं को मिलती है जो विपरीत परिस्थितियों में भी मेहनत करना नहीं छोड़ते.

"जो पानी से नहाते हैं वो लिबास बदल सकते हैं पर जो पसीने से नहाते हैं वो इतिहास बदल सकते हैं" .

अनुराधा

बचपन....

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दीवाना था
खबर न थी कुछ सुबह की
ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
मां की कहानी थी
परीयों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था।

शिवानी कुमारी (स्वरचित)

माँ की लाडली मेरी बहन....

माँ की लाडली
पापा की परी
सहेली सी बहन
भाई की राजकुमारी
कल विदा हो जाएगी।

रोते हुए आई थी
रुलाते हुए चली जाएगी
ऐ बहन तू हमें बहुत याद आएगी।

कलेजे के टुकड़े को
रो-रोकर भुलाना होगा
आँखों में आँसू होंगे
फिर भी मुस्कुराना होगा।

बचपन कि वो सब यादें
पल में बेगाने हो जायेंगे
तुझे हम भूलना पाएंगे।
बहना तू ऐसी मुसाफिर है
रात भर बसेरा है
सुबह चले जाना है।

लेकर ख़ुशी यहाँ से
तुझे उस घर को सजाना है
रखना है सब को खुश
बस माँ का यही वचन तुम्हें निभाना है।

संतोषी चौहान (स्वरचित)

शिक्षा..

शिक्षा और मेहनत एक ऐसी सुनहरी चाबी होती है, जो भाग्य के बंद दरवाजे बहुत आसानी से खोल देती है ।

अजय पोषवाल

मुझको ठेकेदार बना दो.....

नीले अक्षर छाप छाप कर ,
देख किताबें रात रात भर
मस्ती से मन मार मार कर,
किसका भला हुआ पढ़ लिख कर ...

तुम भी तो पढ़ लिखकर मम्मी ,
ड्यूटी ड्यूटी चिल्लाती हो
सोमवार सुबह चली जाती हो ,
शनिवार शाम घर आती हो ...

हफ़्ते भर की माथा पच्ची से ,
एक दिन मोहलत मिल पाती है
उस पर भी आकर मम्मी तुम ,
मुझको डांट लगाती हो ..

मुझको दूर नहीं रहना है ,
मम्मी मुझे नहीं पढ़ना है
सारी चिन्ता दूर हटा दो ,
स्कूल से मेरा नाम कटा दो
ईंटों का भट्टा खुलवा दो ,
और मुझको ठेकेदार बना दो ....
गुण भाग और जोड़ घटाना,
करना मैने सीख लिया है
लिखना मैने सीख लिया है ,
पढ़ना मैने सीख लिया है,

ईंटों का भट्टा एक खुलेगा,
रोजगार बढ़ जायेंगे,
उन बेचारे मजदूरों के, घर में
भी चूल्हे जल जायेंगे..

तुम भी अपने कन्धों से,
घर के खर्चे का बोझ घटा दो,
ईंटों का भट्टा खुलवा दो ,
मुझको ठेकेदार बना दो...

सविता कश्यप (स्वरचित)

एक छोटी-सी परी

एक छोटी-सी परी, एक छोटी-सी परी
जिसने दुनिया में अपना अस्तित्व बनाना चाहा,
पर जब भी उसने कदम बढ़ाये
तो हर किसी ने रोकना चाहा,
पर वह रुकी नहीं,
शिक्षा का दीप उसने जलाये रखा
औरअपने जीवन से
अंधेरे को दूर भगाये रखा।।

एक छोटी- सी परी, एक छोटी- सी परी
उसके दीपक की लौ से,
दीप अनेक जगमगाये
जिससे बहुत सारी परियों के
जीवन को मिली अनेक दिशायें।।

यह सब देख सभी ने उसे अपनाया
और उसका आभार जताया,
आज उसके जीवन में भी नया क्षण आया,
आज शायद समाज में उसने अपना अस्तित्व था पाया।।

एक छोटी- सी परी एक छोटी- सी परी
उसने शिक्षा का दीप जलाये रखा
विश्वास खुद पर बनाये रखा
अब उसके मन में न कोई द्वेष था
न कोई डर
अब तो वह कर रही थी अपने समाज में
शिक्षा का दान हो के निडर

एक छोटी -सी परी एक छोटी- सी परी
जिसने शिक्षा का दीप जलाये रखा.....

शिवाली सिंह (स्वरचित)

दृढ़-निश्चय

मनुष्य के समक्ष कोई भी चुनौती अकेले नहीं आती, अपितु वह अपने साथ ढेरों अवसर लेकर आती है। बस आवश्यकता है तो सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उस संकट से बाहर निकलने की भूख की। मनुष्य चाहे तो दृढ़-निश्चयी होकर किसी भी चुनौती से स्वयं को बाहर निकाल सकता है। परंतु उसे यह याद रखना होगा कि एक इच्छा कुछ नहीं बदलती, एक निर्णय कुछ नहीं बदलता लेकिन एक निश्चय दुनिया बदलने का सामर्थ्य रखता है।

शिवानी शिवा

मानवता की शान

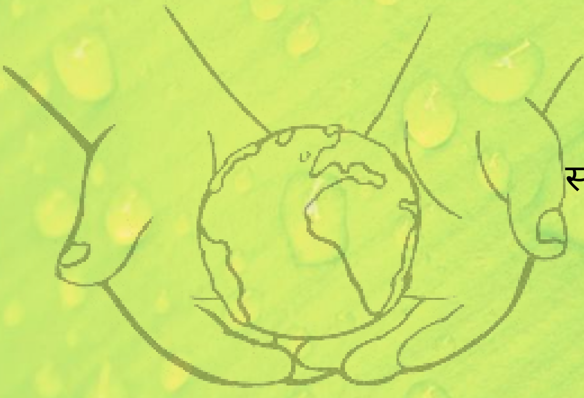

दया, विनम्र स्वभाव मानवता की शान हैं।
इंसान की यही तो असली पहचान हैं।

इन गुणो को संजोए आगे बढ़ना हैं।
सफलता के शिखर को पाने के लिये सबको पढ़ना हैं।
इंसान की यही तो असली पहचान हैं।
दया, विनम्र स्वभाव मानवता की शान हैं।

सच्चाई, ईमानदारी से चलते हैं जो वो महान हैं।
इंसान की यही तो असली पहचान हैं।
दया, विनम्र स्वभाव मानवता की शान हैं।

सन्दीप कुमार (स्वरचित)

लक्ष्य से तू ना विचलना..

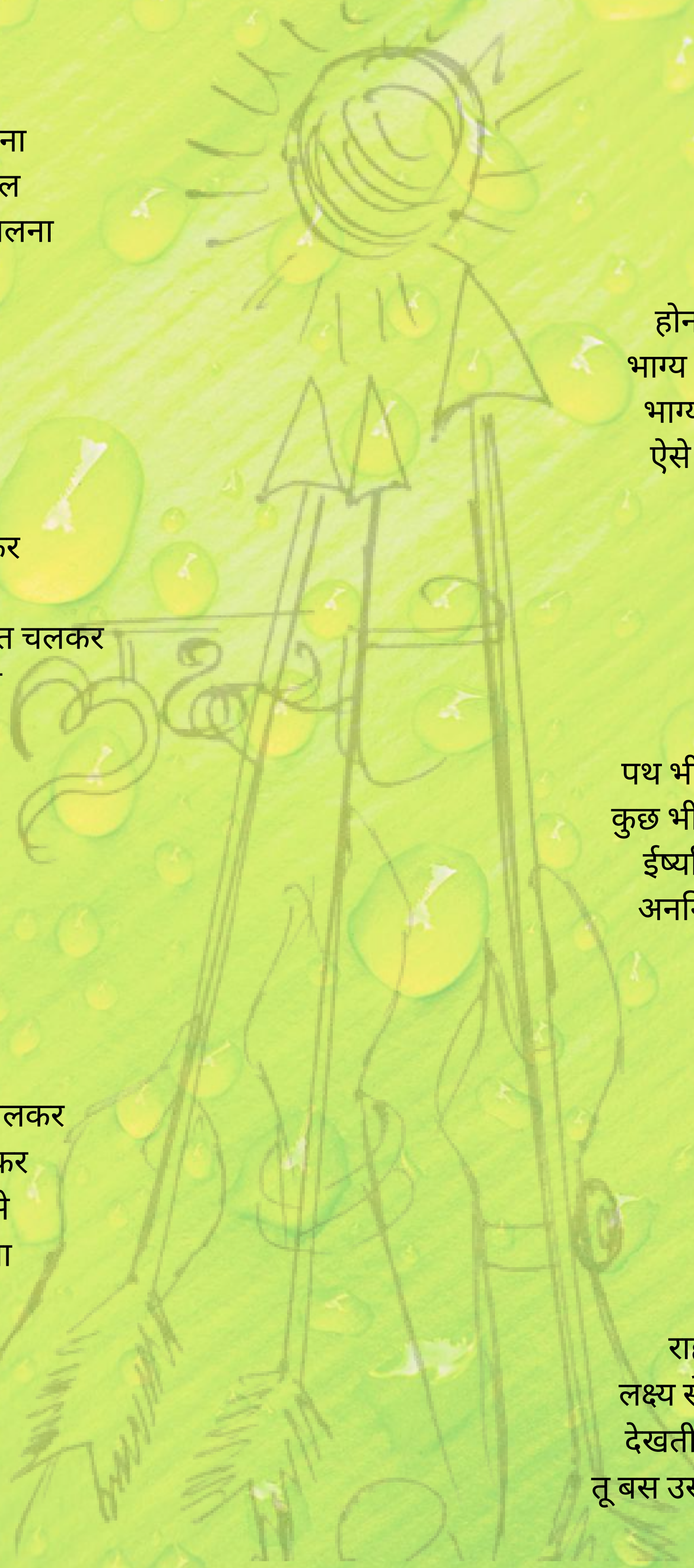

राह में तू न बिखरना
लक्ष्य से तू नया विचलना
देखती है तुझको मंजिल
तू बस उसी की ओर चलना

होना है जो वही होगा
भाग्य का जो लेख होगा
भाग्य का निर्माता है तू
ऐसे कैसे जो भी होगा

खुद को हवा से तेज कर
दावा चमक के वेग पर
अथक, अविचल, सतत चलकर
वहाँ है तुझको पहुंचना

पथ भी कहीं भटकाएगा
कुछ भी समझ न आएगा
ईर्ष्या, छल से सना पथ
अनगिनत बाधा लाएगा

तब हिम का नक्शा खोलकर
खुद को उसी पर मोड़कर
हार डर भय के धनुष से
तीर सा तू बढ़ निकलना

राह में तू न बिखरना
लक्ष्य से तू नया विचलना
देखती है तुझको मंजिल
तू बस उसी की ओर चलना

शुभम कुमार (स्वरचित)

पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी

5 जून को हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं लेकिन हम यह सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी समझ लेते हैं कि पर्यावरण का संरक्षण करना सिर्फ सरकार का काम है हम तो बस सिर्फ व्हाट्सएप पर कुछ विचार साझा करके अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेते हैं और सोचते हैं कि यहीं पर हमारी जिम्मेदारी खत्म हो गई। एक बार भी हमारे मन में यह ख्याल नहीं आता कि हम अपनी कुछ आदतों में सुधार करके पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें।

प्रकृति हमारी मां है यही हमें पाल रही है इसका एहसास हमें तब होगा जब प्रकृति में छेड़छाड़ करने पर आपदाएं आने शुरू हो जाएंगी। हम मनुष्य तब तक अपनी गलती नहीं मानते जब तक हमारी गलतियों की वजह से कोई भयंकर हानि ना हो जाए।पृथ्वी को अगर बचाना है तो पहलेजल, जंगल और पर्यावरण को बचाना होगा। जंगलों की कटाई, जल का अवैध रूप से दोहन और प्रयोग, वायु में जहरीली गैसों का उत्सर्जन और फैक्ट्रियों द्वारा नदियों में जो जहरीला पानी हम मिला रहे हैं इन सभी हमारी गतिविधियों का अंजाम एक दिन हमें भुगतना पड़ेगा और हम भुगत रहे हैं। ओजोन परत क्षतिग्रस्त हो रही है इसके चलते तापमान कहीं गुना बढ़ गया है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, सांस लेने के लिए शुद्ध हवा नहीं है पीने के लिए साफ पानी नहीं है यह सब झेलने के बाद हमें पूरा साल पर्यावरण के बारे में कुछ ख्याल नहीं आता बस 5 जून को थोड़ा सा विलाप करके, कुछ एक विचार साझा करके हम पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाहन समझते हैं।

हमें पर्यावरण को शुद्ध और सुरक्षित रखने के लिए बहुत सारे कदम उठाने होंगे जैसे-वृक्षारोपण पर अधिक जोर देना होगा, वृक्षों की अवैध कटाई पर रोक लगानी होगी, प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करना होगा, जहां जरूरत ना हो वहां पेट्रोल डीजल से चलने वाले वाहनों की जगह हम पैदल या फिर साइकिल का उपयोग कर सकते हैं। समस्याएं बहुत हैं लेकिन उनका समाधान भी हमारे ही पास है, हम हर चीज का जिम्मेदार दूसरों को नहीं ठहरा सकते शुरुआत हमें अपने से ही करनी होगी जब हम अपने आदतों में सुधार करेंगे तभी हम दूसरों को भी सुझाव दे सकते हैं लेकिन सबसे पहले शुरुआत अपने से ही करनी है।

उर्वशी चौधरी

हमारा प्यारा पर्यावरण.................

चारों ओर घिरा जो जीवन के,
पर्यावरण कहलाता है।
हरी-भरी धरती पर ही,
हर जीव-जंतु मुस्कुराता है।।

भीषण आई है बाढ़ कहीं,
और कहीं पर सूखा है।
मानव के कर्मों के कारण,
जीव-जंतु जग भूखा है।।

भूमंडल जल रहा है आज,
जंगल-जंगल जले अंगारों में।
धरती माता बेचारी सिसक रही है,
लग गया ग्रहण सिंगारों में।।

प्रकृति के कण -कण में है ,
सुंदर संदेश समाया।
ईश्वर ने इसके द्वारा ज्यों,
अपना रूप दिखाया।।

मानव सहित जीव पौधों का,
दम आज प्रदूषण से घुटता है।
इस विकराल समस्या में,
क्यों सभ्य समाज नहीं जुटता।।

वृक्ष लगायें शोभा पायें ,
चिड़ियाँ को दाना-पानी दें।
हाथ मिलाकर मुहिम चलाकर,
नवजीवन को आसानी दें।।

दीपक कुमार (स्वरचित)

सत्य का महत्व

मनुष्य को मानव जीवन बडे सौभाग्य से प्राप्त होता है, मानव के पास बुध्दि का असीम भण्डार है, जिससे वह ज्ञानार्जन करता है, विद्या प्राप्त करता है, धर्म-कर्म करता है, आदर्श गुणों से ही मनुष्य के रूप की शोभा होती है, गुणों से ही कुल की शोभा होती है, गुणों से ही विद्या सुशोभित होती है। जीवन के लिये जहां शिष्टता, शीलता, नम्रता, उदारता आदि गुण आवश्यक बताये गये हैं उनमे सत्यता का सर्वप्रथम स्थान है। अन्य गुणों से केवल मनुष्य को लौकिक मान-मर्यादा ही प्राप्त होती है परन्तु सत्य भाषण करने वाला ही सत्य स्वरूप परमात्मा को जान सकता है। सत्य भाषणा मानव के सभी आदर्श गुणों मे शिरोमणि है। ऐसी कौन सी सफलता और सिध्दि नहीं है जो इस सत्य साधन से प्राप्त न होती है। संसार संघर्ष की भूमि है, यहॉ मनुष्य को उन्नति के लिये पग-पग पर संघर्ष करना पडता है परन्तु जीत उसकी होती है जो सत्य के पथ पर चलता है, झूठ बोलने वाले की कभी विजय नहीं होती! यदि हम जीवन पथ में आगे बढना चाहते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि अपने माता-पिता से, मित्रों से, गुरूजनों से, सम्बन्धियों से कभी झूठ न बोलें। सत्य बोलना कठिन है लेकिन असम्भव नहीं।

"सत्यमेव जयते,नानृतम् ।"

मो० तारीक

विश्वास

विश्वास भरा हो मन में,
स्फूर्ति जगे तन मन में,
कोई कार्य नहीं इस जग में,
तुम हार कभी न मानो ,
चाहे कितना भी मुश्किल हो !
हंसते-हंसते मिट जाएगा ,
हर वाधा दूर गगन में !
ईश्वर भी मदद करेगा ,
विश्वास रखो निज कर में !
जब भी तुम घबराओ,
वह शक्ति भरेगा तुम में !
चुनौती अगर सामने आए,
करो मुकाबला डट के.!
रहो आत्मबल से पूरित,
हर संघर्ष विजित जीवन में !

सन्तोष कुमार (स्वरचित)

अनभिव्यक्त..

हमें डराने निकले हैं, वो पानी की बौछारों से
हमें डराते फिरते हैं, इन लंबी पुलिस कतारों से
हम भारत के भूमिपुत्र हैं, वसुधा के शृंगार हैं हम
तुम होंगे सरकार देश की, इस जग की सरकार हैं हम।

इसी अन्न को खाकर के, तुम तोंद फुलाये बैठे हो
छके हुए लफते हो साहब, तभी तो इतना ऐंठे हो।

तुमने क्या कुछ गलत किया है, ये आभास नहीं तुमको
मुखर विरोधी भाषाओं का है अभ्यास नहीं तुमको
तुमको तो शोभन लगता है जो चारण सब गाते हैं
अब तो मात्र प्रशंसा के ही फूल तुम्हें सब भाते हैं ।

लोकतंत्र के चौथे खंभे को भी तुमने तोड़ दिया
राजतन्त्र के प्रतिरोधी को देश विरोधी बोल दिया
भूखे पेटों की पीड़ाएँ तुमने नहीं सुनी शायद
नंगे बदनों की कंपाहट तुमने नहीं सही शायद
औने-पौने फसल बेचकर जब किसान घर जाता है
आत्महत्या तो नाम की है वो पहले ही मर जाता है ।।

आदर्श भारद्वाज (स्वरचित)

जिन्दगी..

जिन्दगी पर एक किताब लिखेंगे,
उस में सारे हिसाब लिखेंगे।

तुम्हारे साथ अधूरे सवालों के,
हम जवाब लिखेंगे।

कुछ बदलते अपनों के लहजे लिखेंगे,
कुछ अपने टूटे ख्वाब लिखेंगे।

कुछ अपने हालात लिखेंगे,
उनमें भी सारी बात लिखेंगे।

जो कह न सके,
सारे जज़्बात लिखेंगे। वो

पर एक किताब लिखेंगे,
जो कह नया सके वो जज़्बात लिखेंगे ।

सत्यम (स्वरचित)

अभिनन्दन

नन्हा सा एक मोती उजला, घर आंगन फैला उजियारा,
करताल बिगुल से प्रखर स्वर तुम्हारा, गौरव है शृंगार तुम्हारा,
हुआ जन्म उस धरा पर, हिन्द है जो नाम प्यारा,
लिया प्रण देश सेवा का, किया प्रकृति ने अभिनन्दन तुम्हारा।

घिरे शत्रु से रण में जब, साथ ना था कोई संगी प्यारा,
तेज पापन प्रखर ऊर्जावान, भास्कर सा था मुख तुम्हारा,
नहीं खोज खबर हिन्द धरा की, शत्रु कोशिश कर-कर हारा,
मिटा दिया बैरी का दंभ, अभिनन्दन जय-जय कार तुम्हारा।

पवन-पुत्र सी तुम में शक्ति, मुकुट राष्ट्र का तुमको प्यारा,
हे! वायु वीर प्रहरी,हिमगिरि सा प्रबल संकल्प तुम्हारा,
आगमन देश धरा पर, शत-शत तुमको नमन हमारा,
वायु सेना के तुम वीर सिपाही, अभिनन्दन वर्धमान नाम तुम्हारा,
रहे वीरता और साहस के स्वर, सम्पूर्ण जगत फैला उजियारा ।

अजय कुमार (स्वरचित)

बेटी....

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियां साथ लाती है बेटी।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी ।

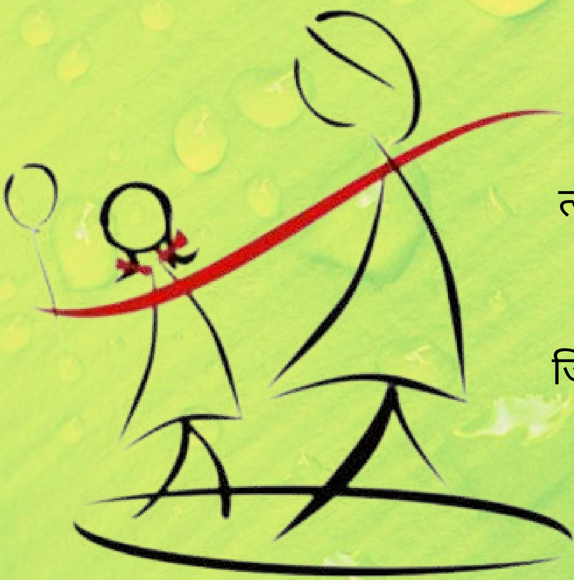

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए-नए रिश्ते बनती है बेटी।

जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी ।

शुभम (स्वरचित)

कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है

छिप-छिप अश्रु बहाने वालों !
मोती व्यर्थ बहाने वालों !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है ? नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों,
जागे कच्ची नींद जवानी
गीली उमर बनाने वालों।
डूबे बिना नहाने वालों।
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता।

माला बिखर गई तो क्या है
खुद ही हल हो गई समस्या,
आँसू गर नीलम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या,
रूठे दिवस मनाने वालों ।
फटी कमीज सिलाने वालों !
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी।
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती
वस्त्र बदल कर जाने वालों ,
चाल बदल कर जाने वालों,
चन्द खिलोनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरिया फूटी
शिकन न आई पनघट पर
लाखों बार किश्तियाँ डूबी
चहल-पहल वो ही है तट पर
तम की उमर बढ़ाने वालों
लौ की आयु घटाने वालों
लाख करे पतझड़ कोशिश, पर उपवन नहीं मरा करता है।

सलमान (स्वरचित)

कोरोना वायरस

आज कैसा ये भयानक दौर है आया,
पूरे विश्व पर है कोरोना वायरस का साया
लोग घरों के बाहर निकलने से डर रहे हैं,
जहां देखो वहाँ लोग कोरोना से मार रहे हैं।

देश में लगानी पड़ी तीन महीने तालाबंदी
पर भी छा गई बहुत बड़ी मंडी
ठप्प कर दिए इसने लोगों के कारोबार
नहीं मिल पा रही है गरीबों को पगार।

तकनीकी का घमंड करने वालों को दिया है ज्ञान
मत भूलो इंसानों प्रकृति का एहसान
पूरा विश्व हो गया है प्रदूषण से मुक्त
परत का छेद भी होने लगा है विलुप्त।

खैर, कोरोना ने रिश्तों का एहसास है कराया
परिवारों को एकजुट होकर रहना भी सिखाया
एक ओर स्कूल कॉलेजों पर ताला है लगवाया
वहीं पक्षियों को आजादी का एहसास भी कराया।

सभी को स्वच्छता का दिया है ज्ञान
गढ़ है इसका चाइना का शहर वुहान
करनी होगी हमें अपनी और अपनों की देखभाल
तभी विश्व जीतेगा कोरोना से हर हाल ।

एकता सैनी (स्वरचित)

कुर्सियाँ औरतों को तरसती हैं

रसोई में कोई कुर्सी नहीं होती।
कुर्सी होती है घरों की बैठक में,
जिनके सामने ट्रे पकड़ी औरतें
अक्सर झुकी हुई नज़र आती है।

शयन के लिए होते है बिस्तर,
जिनपर औरतों के बैठते ही
सीधा लेटा दिया जाता है उन्हें,
कमर सीधी करने के मकसद से।

चौकियों में या चौकडी मार बैठी
कपड़े धोती औरतों का दृश्य
कितना आम है हमारी नज़रों में।

कितनी बार देखा है हमने मां को
या किसी औरत को कुर्सी पर बैठे,
पढ़ते, बात करते, लिखते, आराम करते?
गाड़ी की कुर्सी,
संसद की कुर्सी,
घर की आराम कुर्सी
या आफिस की कुर्सी

।

एक दिन सारे दफ्तरों से
निकाल ली जाए सभी कुर्सियां
और देखा जाए कौन हो सकता है
अपने पैरों पर खड़ा, एक दिन के लिए भी।

फिर सालों से अपने पैरों पर खड़ी
इन औरतों को बैठाया जाए कुर्सियों पर।

कुर्सियों पर बैठे तानाशाह,
जो औरतों की भूख रखते है,
इनसे जलवाए जाएं चूल्हे और
कराया जाए हर आंच के ताप का एहसास।

कुर्सियां जो औरतों के नियम बनाती है,
उनपर अभिषेक हो स्त्रियों का। .
.

कुर्सियां नहीं भेदभाव तो हम करते है,
कुर्सियां तो शायद औरतों को तरसती हैं।

शिवम (स्वरचित)

मंजिल....

कर परिश्रम आगे कदम बढ़ाना है,
मेहनत कर सफलता को पाना है।

राह नहीं आसान तेरी मंजिल को पाना है,
पथ का निर्माण कर मंजिल को पाना है।

कर परिश्रम आगे कदम बढ़ाना है,
मेहनत कर सफलता को पाना है।

साहस दिखा जुटा हिम्मत की डोर,
दे मानवता का परिचय न कर मन विभोर,
आत्म विश्वास भर लक्ष्य को पाना है।

कर परिश्रम आगे कदम बढ़ाना है,
मेहनत कर सफलता को पाना है।

विक्की (स्वरचित)

माँ ....

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
ना जाने कब बड़ा हुआ।

काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूं हर जगह,
माँ प्यार ये तेरा कैसा है?

सीधा-सादा, भोला-भाला,
मैं ही सब से अच्छा हूं,
कितना भी हो जाऊं बड़ा,

माँ, मैं आज भी तेरा बच्चा हूं।

योगेश कुमार (स्वरचित)

मेरी कलम से ..

वक्त का क्या है, ये भी भला किसी का होता है,
कब किसके दरवाजे पे दस्तक दे, किसे पता है,
कुदरत ने अपना करिश्मा दिखाया है,
मेरे दादाजी के सपनों को साकार करने,
मुझे आजमाया है।

जिंदगी के कुछ अरमान लेकर, कुछ सपने लेकर
अपने बेबे बापू का करने सपना पूरा, मैं शहर आयी।

मंजिल थी लंबी, रास्ते थे हजार
समझ मेरी कुछ नहीं आया, फिर मिले दोस्त चार,
धीरे-धीरे रास्ते मिलते गए, और कुछ अपने हुए तो कुछ पराए हुए।

लगता था डर खो जाऊँगी इस भीड़ में,
कभी संभाला बापू ने तो कभी बेबे की पीड़ ने,
कहते हैं लोग क्या करेगी कर के पढ़ाई,
पर उन्हें कैसे बताऊँ क्या होती है सपनों की ऊंचाई।

हजार सपने बुने हैं तो हजार टूटे भी हैं ,
मैंने अपनी मंजिल पाने को अपने ही छोड़े भी हैं ।
है विश्वास मैं कुछ बड़ा करूंगी,
सबको एक दिन चुप मैं करूंगी,
बेबे का मान बापू की शान बढ़ाऊँगी,
छोटी-छोटी खुशियों से अपना घर बढ़ाऊँगी।

कहते हैं जो कुछ नहीं कर सकती ,
एक दिन कुछ कर के उन्हें दिखाऊँगी,
तोड़ नहीं सके मरे अपने ही मेरे सपनों को,
तो तू क्या तोड़ेगा ऐ कोरोना,
जंगें तो और भी बहुत थी पर तेरी ही कमी थी,
आ तू भी आजमाना ।

स्वाति देवी (स्वरचित)

छोटी सी उम्मीद....

दूर है मंजिल विश्वास भी,
रास्ता है कठिन पर आस भी।

छंट जाएंगे बादल मुश्किलों के,
रुक कर भी नहीं रुकना,
क्योंकि चलना ही जीवन का इतिहास भी,
दूर है मंजिल विश्वास भी,
रास्ता है कठिन पर आस भी।

मुस्कान होगी हर चेहरे पर फिर,
नया जोश, नया सवेरा साथ भी,
चुनने है कांटे राहों से,
क्योंकि कर्तव्य पथ पर चलने का,
हमें है एहसास भी,
दूर है मंजिल विश्वास भी,
रास्ता है कठिन पर आस भी।

डोल रही नैया बीच मझधार में,
लगेगी पार करें अगर मिलकरप्रयास भी,
मिल जाती है मंजिल हर मुसाफिर को,
अगर हो "छोटी सी उम्मीद" पास भी,
दूर है मंजिल विश्वास भी,
रास्ता है कठिन पर आस भी।

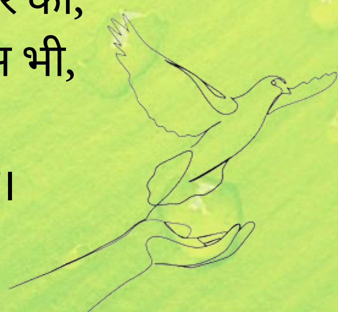

विकास (स्वरचित)

समानता क्या है?

धूल, कंकड़, पत्थर, पहाड़ सबकी अपनी शान है,
अपना मानहै; हवा, जल, अग्नि सबकी अपनी पहचान है,
कौन किससे भला समान है?
समान कुछ नहीं यहां सबका बस अपना स्थान है।

छोटी सी झोपड़ी हो या ऊंची महल-अटारी
नहीं वो किसी समानता के अधिकारी
पर दोनों का एक ही प्रयोजन है।

अब भला नर हो या नारी,
दोनों की अपनी-अपनी जिम्मेदारी,
इसमें समानता-असामनता की बात क्यूं आई?
दोनों मिलकर ही तो सजाते जग की क्यारी।

अब जलाए अग्नि या बुझाए जल,
जलाए जल या बुझाए अग्नि
सबकी करनी अपनी-अपनी,
इससे क्या फर्क पड़ता है कि
वो कौन से जिस्म में रहता है
फल तो सब कर्मों के ही भोगता है।

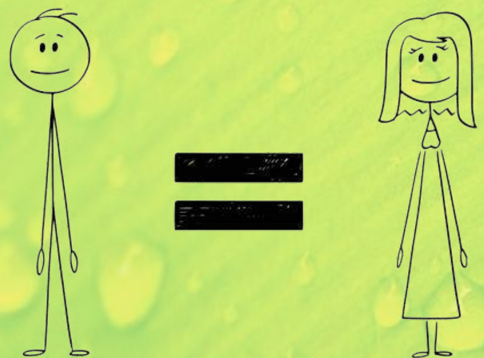

विश्वास चौधरी(स्वरचित)

Online Classes और हम..

यह कोविड का वार है
सहमा सारा संसार है ।
छूटे सब काम और पढ़ाई,
बोलो, यह तेरा कैसा अत्याचार है ।

इस कोरोना काल में,
online हुई शिक्षा, यह भी इसका एक आधार है।
कभी रहती थी दुकानों में,
आज देखो तो सब खुला बाजार है।

आधुनिकीकरण में अब,
मोबाइल ने उठाया भार है।
जहां हम जाया करते थे स्कूल-कॉलेज,
अब इनके बदले google classroom, google meet,
और न जाने कितने online teaching apps
का लगा अंबार है।

होने लगी अब हमारी online classes,
और होने लगाा हमारे अध्यापकों का दीदार।
पहले रोज तो सब आयें, पर फिर बहानों का लगा अंबार।
किसी के तो हैं network weak, तो किसी के पास काम की भरमार है ।

चाहे ईच्छा हो या न हो,
यह गुरु और शिष्य का आपसी करार है।
कितना भी कर ले परेशान ऐ Covid,
तू ना ला पाएगा शिक्षा में दरार है।

google meet पर घंटों देर तक बैठते हैं अब हम,
घोर निंद्रा का छाया रहता है हर व्यक्त खुमार।
अब न चलता है कोई बहाना,
चाहे कोई दुखी हो, या हो कोई बीमार।

देखो, कितनी नवीनता आई अब हमारी शिक्षा में,
पहले पढ़ते थे किताबों से।
और अब तो बस pdf, ppt और e-books की,
भरमार है।

मेरी तो है रोज की आदत,
एक मैंने ही बोलूँ class में,
मेरे सहपाठियों का तो जैसे रहता हो मौन व्रत
अम्बिका मैम भी बोल पड़ती हैं,
अब क्या तुम ही बोलोगी हर वक्त ?
चलो अब निकलते हैं, knowledge, discipline और
guidance से बाहर,
अरे सबको तो पता है ना, कि यही रहते हैं, अम्बिका मैम के topic।

बिल्कुल-बिल्कुल क्यों नहीं? ऐसा भी हो सकता है
यह कहना होता है हमारे शांत और शालीन स्वभाव के मोनू sir का।
मनोज sir तो बस दिखते कठोर हैं,
पर अंदर से विशाल सागर समान प्यार की भरमार हैं।
प्रश्नों को पूछते हैं बारी-बारी
बीच-बीच में सोचती हूं, आर मेरी बारी क्यों नहीं आ रही?

class शुरू होने के पाँच मिनट बाद entry ban है,
join होते हैं भागे-भागे, बच्चे क्योंकि मेघा मैम तो
केवल समय की पाबंद हैं।
प्रश्न पूछती हैं वो बिल्कुल straight,
किसी को आए तो ठीक, वरना है time wastage ।

सबका सार हैं हमारी पूर्णिमा मैम,
यह है स्वर कोकिला और हो जाता है हमारी
class का माहौल रंगीला।
सुनकर लगता है बस सुनती जाऊँ,
class न हो कभी खत्म, और मैं बस खोती जाऊँ।

यह थीं कुछ खट्टी-मीठी online classes की बातें,
जो हैं हमने जानी और पहचानी।
classes online हुई तो क्या, लेकिन एहसास तो वही है,
college वाला, जो कभी नहीं है भुलाना।।

online classes से हुआ है हमारा उद्धार,
क्योंकि यह भी तो है शिक्षा का आधार।
रह जाते हम भी पढ़ाई से वंचित,
अगर हुआ न होता इस कड़ी में ऐसा प्रयास किंचित।

संतोषी (स्वरचित)

ENGLISH SECTION

Swami Vivekananda Motivational Quotes :

Quote 1: उठो, जागो और तब तक मत को जब तक ल य क
English: Arise, awake and do not stop until the goal is reached.

Quote 2: खुद को कमजोर समझना सबसेबड़ा पाप ह ।
English: The greatest sin is to think yourself weak.

Quote 3: तुमको कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता, तुमको सब कुछ अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा शिक्षक कोई नहीं है।
English: You have to grow from the inside out. None can teach you, none can make you spiritual. There is no other teacher but your own soul.

Quote 4: सत्य को हजार तरीके से बताया जा सकता है परंतु सत्य एक ही होगा।
English: Truth can be stated in a thousand different ways, yet each one can be true.

Quote 5: बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप है।
English: External nature is only internal nature writ large.

Quote 6: ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं, वो हम ही हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और रोते हैं कि कितना अंधेरा है ।
English: All the powers in the universe are already ours. It is we who have put our hands before our eyes and cry that it is dark.

Quote 7: विश्व एक विशाल व्यायामशाला है जहाँ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।
English: The world is the great gymnasium where we come to make ourselves strong.

Quote 8: दिल और दिमाग के टकराव में दिल की सुनो।
English: In a conflict between the heart and the brain, follow your heart.

Quote 9: शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है। विस्तार जीवन है, सकुंचन मृत्यु है। प्रेम जीवन है द्वेष मृत्यु है।
English: Strength is Life, Weakness is Death. Expansion is Life, Contraction is Death. Love is Life, Hatred is Death.

Quote 10: किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आये– आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं ।
English: In a day, when you don't come across any problems – you can be sure that you are travelling in a wrong path.

Chanchal

A New Champion

A change if positive is not so bad
That’s the only way
To make your haters mad
Don’t think why
your day was so bad
It was only you,
Who was holding yourself back.

Do, whatever you have to do,
To get ahead in life
It ‘s going to be tough,
it’s going to be tight

To conquer something
There will be sleepless nights,
days will be there, when
nothing gonna be alright.
You have to make yourself
you have to win every fight.

Its just the start
It might sound some slow
When will be at the top
Your success will make everyone bow
You might have to cut off your relationship,
to make yourself grow,
they will be more than happy
to see how far you ‘overflown.

I just thought,
I should put that out there for you;
100% of what you think ,
you actually can do.
Ya; it is only you
who is feeling so shy
to start something new
and to give it a try

And remember what i said
No body is there holding you back
(But what)always keep trying
Cu's you just need a track

Your victory will glow
that day is not too far
as time will come,
when people gonna know
what champion you are.

Sanjay Singh Mehta(Self Composed)

The Obstacle in Our Path (Opportunity)

In ancient times, a king had a boulder placed on a roadway. He then hid himself and watched to see if anyone would move the boulder out of the way. Some of the king's wealthiest merchants and courtiers came by and simply walked around it. Many people loudly blamed the king for not keeping the roads clear, but none of them did anything about getting the stone out of the way.

A peasant then came along carrying a load of vegetables. Upon approaching the boulder, the peasant laid down his burden and tried to push the stone out of the road. After the peasant went back to pick up his vegetables, he noticed a purse lying in the road where the boulder had been. The purse contained many gold coins and a note from the king explaining that the gold was for the person who removed the boulder from the roadway.

Moral of the Story

Every obstacle we come across in life gives us an opportunity to improve our circumstances, and whilst the lazy complain, the others are creating opportunities trough their kind hearts, generosity, and willingness to get things done.

Anjali

My Dear College

I worship you my dear college
You provided me knowledge
You taught me life's lesson
Gave my life a right direction.

The classroom where I study
The pleasant company with buddy
Whenever I remember your premises
That saved me from all nemesis .

You'll always be in my memories
You are Really the make up of my worries
You opened the gate way to my future
I was the wound and you were the suture.

Perhaps one day everything will pop off by time.
But you will continue to find a place in my rhyme.

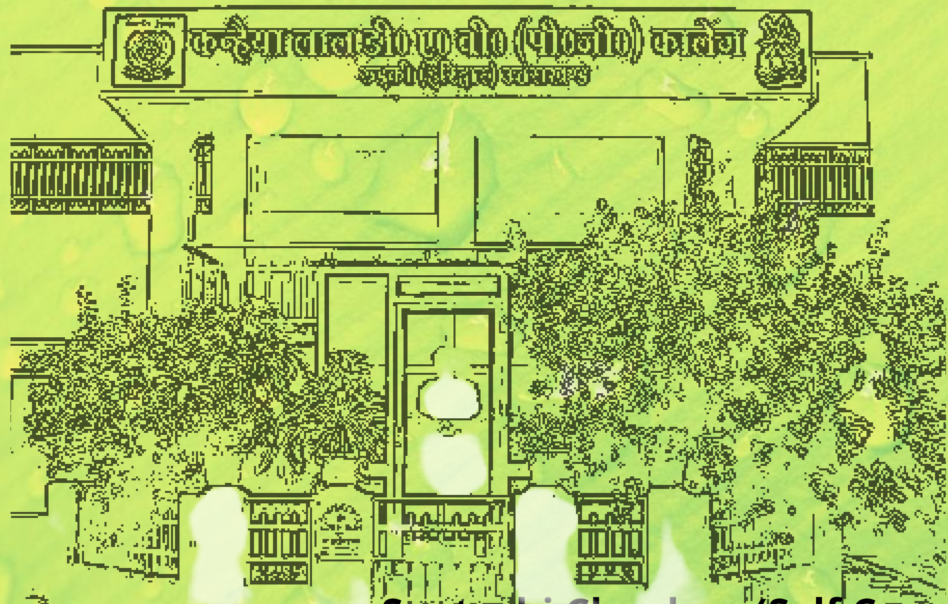

Santoshi Chauhan (Self Composed)

Role of Technology in Covid-19

Science and technology have always been the most powerful weapon used by mankind to combat epidemics.

New technologies played a major role in COVID-19 prevention and control.

New technologies such as big data, artificial intelligence (AI) and 5G have been widely used in epidemic trend prediction and epidemiological investigation, which has contributed greatly to finding all infected cases and their close contacts.

For example, interactive maps backed by big data technology allow users to check out the infection risk of certain areas by displaying the distribution of confirmed cases. "Health QR code" systems, authorized by the users, can track an individual's exposure history to the epidemic, serving as an important tool in risk control when work, school and daily life activities started to get back on track.

Here are some technology trends that is helping in building a resilient society, as well as considerations about their effects on how we do business, how we trade, how we work, how we produce goods, how we learn, how we seek medical services and how we entertain ourselves.

1. Online Shopping and Robot Deliveries

COVID-19 has transformed online shopping from a nice-to-have to a must-have around the world. Online shopping needs to be supported by a robust logistics system.

In-person delivery is not virus-proof that is why the concept of robot and drone delivery have been introduced.

2. Digital and Contactless Payments

Contactless digital payments, either in the form of cards or e-wallets, are the recommended payment method to avoid the spread of COVID-19. Digital payments enable people to make online purchases and payments of goods, services and even utility payments, as well as to receive stimulus funds faster.

3. Remote Work

Many companies have asked employees to work from home. Remote work is enabled by technologies including virtual private networks (VPNs), voice over internet protocols (VoIPs), virtual meetings, cloud technology, work collaboration tools. In addition to preventing the spread of viruses, remote work also saves commute time and provides more flexibility.

4. Distance Learning

As of mid-April, 191 countries announced or implemented school or university closures, impacting 1.57 billion students. Many educational institutions started offering courses online to ensure education was not disrupted by quarantine measures.

5. Online Entertainment

Although quarantine measures have reduced in-person interactions significantly, human creativity has brought the party online.

5. Online Entertainment

Although quarantine measures have reduced in-person interactions significantly, human creativity has brought the party online. Film production companies also released films online. There has also been a surge of online gaming traffic since the outbreak.

The importance of digital readiness

COVID-19 has demonstrated the importance of digital readiness, which allows business and life to continue as usual – as much as possible – during pandemics. Building the necessary infrastructure to support a digitized world and stay current in the latest technology will be essential for any business or country to remain competitive in a post-COVID-19 world, as well as take a human-centred and inclusive approach to technology governance.

Nobody knows when or how this crisis will end, but it seems inevitable that technology will play a larger role in our health care system going forward. Public health workers, policymakers, and providers are working tirelessly to envision the new normal that awaits us.

Gulshera Khan (Self Written)

Career Awareness

In todays age where there is multiple career options are available, it is quite normal for students to be confused. This confusion has led to anxiety and depression among students. Knowledge is power and absolute truth, but adding more power to it depends upon what we do with it. Unfortunately, Indian students seem to lack this concept, who is responsible? Certainly not them. Our education system is designed to psych a child's mind to study just to prepare and pass exams. It has conditioned many of them to believe that extracurricular activities are not important and that getting good grades is what preparing for college is all about and grossly undermines the necessity of imparting the right career awareness to students.

A recent survey on career option awareness among Indian students has revealed that a staggering 93% of students aged 14 to 21 were aware of just seven career options available across 40 domains covering 5,000 job types. This recent reports indicate that the bigger concern is the lack of a career awareness mechanism to guide students. An increasing number of cases have been seen where students fail to manage their career choices in line with their interest and parent's expectations.

It is high time for the government to address this issue and provide a framework for the right career awareness to the students. Understanding the scenario, it goes without saying that there is an urgent need to build a career awareness mechanism pan-India. A huge step in that direction will be the declaration of NATIONAL CAREER DAY by the Government of India.

Having a 'National Career Day' will remind us to attach appropriate importance to the need for promoting career awareness and will indeed serve as an occasion to unite parents, students, schools and counsellors into the framework of providing awareness. This day can be optimally utilized to organise a host of Career Awareness Events and Programmes like Seminars, Webinars, Workshops, Quizzes and One on One session through the active engagement of career experts and other stakeholders. This will not only help students understand their own self for taking informed career decisions but will also help manage a diverse range of problems like low concentration levels and disagreement between parents and children about career choices and school retention levels.

Amit Kumar Singh

+Ve Attitude & Necessity of Ethics and Moral Values in Life

ATTITUDE to me is more than facts success failures. The remarkable thing is that we have a choice everyday regarding the attitude The all thing which matters is positive attitude towards anything in the whole life. We are playing the Role which is already fixed and it repeats each after 5000 years. I convinced with this saying that life is what We respond , what we give solutions , The easy and coolness ,the right decisions we take so I'm here with daily moment in charging of +Ve Attitude.

Knowledge is what makes us understand, embracing the path of learning but Ethics makes a being human, a man of character, belief, purity, nobility, Kindness, Helping hands for others and the Prettiest thing about Ethics is moral development in self awareness in self enrichment of the higher self. Ethics simply defines doing every action with Right Perspective next SHRESTH KARMAS you have to define yourself , right choices , right decisions. Knowledge embraces learning but ethics and moral education leads to the path of PERSONALITY of - clarity, right decision making.

Ethics provides CORE personality to people you are self to our self. Ethics defines people powerfulness, purity discipline etc. Ethics defines people on the path of love happiness imparting knowledge imparting helping others.

CONCLUSION:

All about To say that +VE Attitudes + Ethics and morale + Education leads to --- A GENTLEMEN'S PERSONALITY

Mayank Gupta

Women Safety in India

In India Sati, Sabitri, Durga, Laxmi are worshipped by people treating them as goddesses where as there is increasing number of violence against women. The amount of violence against women has increased by many folds due to the greater exposure of women in every field of life. Women were previously restricted to the four walls of the houses and after globalization they have got the chances and opportunities to stand equally in all sectors at par with male. Women are nowadays cab drivers and they are also the CEO of top companies.

It is a good sign that the patriarchal mind set of the society has changed to some extent but not to the extent it was supposed to. It is the same mindset that restricts women to go out and work making them as a tool for domestication. It is the same mindset that treats males as superior than female and always try to dominate the women folk.

There are different kinds of tools that is being used by the male dominated society to prove their domination over the female. Eve teasing, sexual harassment, rape, domestic violence against women are these weapons used by the male to display the male superiority. This is one of the prime reason violence is increasing in India and women safety is a concern in India. Along with the mind set the slow pace of operation of Indian judiciary is another major reason for the increasing women safety in India.

The police of India is not efficient and not neutral and that is the reason why the cases of violence against women takes long time in the investigation phase. In the name of social pressure and shame many women did not come out and report the matter to police. This is one of the many reasons why the number of cases reported are less than the actual numbers of violence happening against women.

It is a shame that rapes take place every day. Rape is a disease which attacks from everywhere to everywhere. It is an evil that has no boundaries. It is present in every nook and corner of the world. It doesn't differentiate between a 3-year-old kid and an 80-year-old lady. From parties to workplaces to our homes, rape and harassment have become a norm. The survivors of these heinous crimes are then left to be humiliated throughout their life. Some of them even spend their whole "after rape life" on ventilators or they are burnt alive.

In order to improve women safety in India the first task is to improve the number of women in every sphere of society. Along with that the change in mind set of people is very essential for the safety of women. From family to educational institutions men should be taught about respecting females.
Further, there should be fast-track courts to hear the cases and they cases should be investigated in a time bound manner. Only strict laws cannot solve the problem of women safety in India rather the implementation of these laws in a time bound manner can solve the issue to a large extent.

Abhishek kumar

Glimpses of B.Ed. 2019-21

GROUP DISCUSSION & QUIZ COMPETITION

Glimpses of B.Ed. 2019-21

WEEKLY YOGA CAMP

Glimpses of B.Ed. 2019-21

YOGGRAM VISIT

Glimpses of B.Ed. 2019-21

IN NEWS

केएलडीएवी पीजी कालेज में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते बीएड के छात्र-छात्राएं।

छात्रों ने प्रश्नोत्तरी प्रतियो... या दम

Glimpses of B.Ed. 2019-21

SKIT COMPETITION SEM I

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FETE & FAIR 2020

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FETE & FAIR 2020

Glimpses of B.Ed. 2019-21

V A R I O U S

26 जनवरी 2020

गायन प्रतियोगिता 2020

रंगोली प्रतियोगिता 2020

खेल-कूद प्रतियोगिता 2020

26 जनवरी 2020

Glimpses of B.Ed. 2019-21

INTERNATIONAL WOMEN WEEK

MARCH 2020

Glimpses of B.Ed. 2019-21

INVITED TALK (CAREER COUNSELLING & PLACEMENT CELL)

DEC 2020

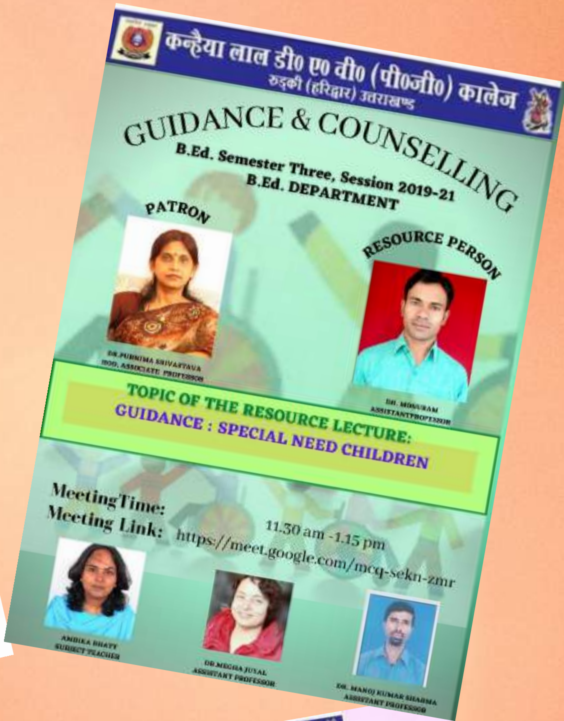

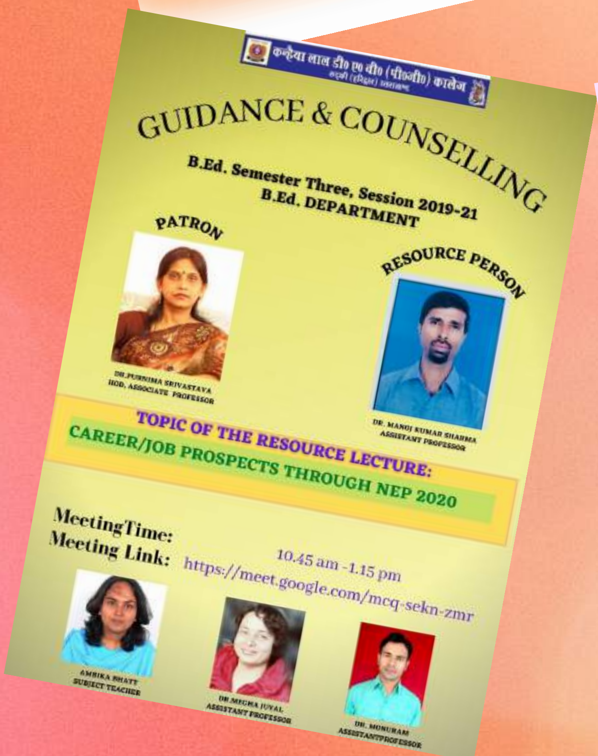

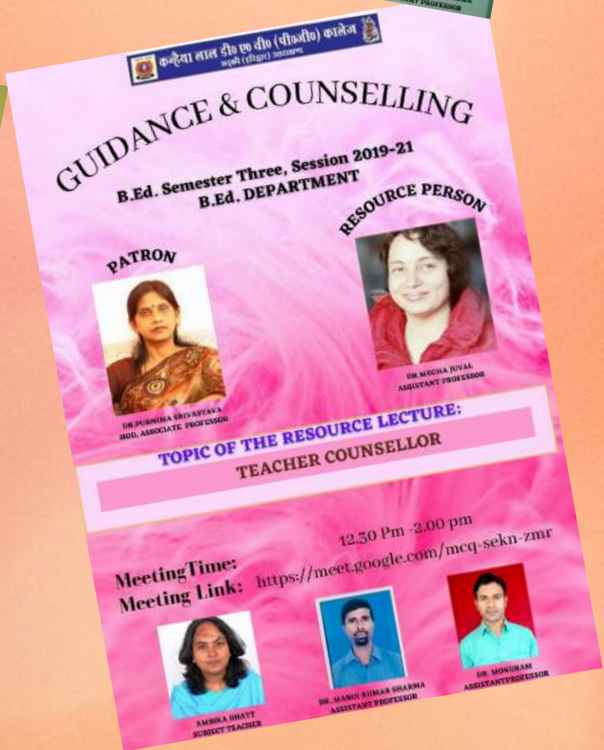

Glimpses of B.Ed. 2019-21

WEBINAR ON NEP 2020
25 MARCH 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FRESHER 2020-22

09 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FRESHER 2020-22

09 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FAIRWELL 2019-21

09 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

FAIRWELL 2019-21

09 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

SKIT PRESENTATIONS
11 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

Glimpses of B.Ed. 2019-21

EXTERNAL EXAMINATION
17-18 NOV 2021

The Completion of the Journey of B.Ed. 2019-21

किसने सोचा था कि हम पर भी होगा ये सितम,
आँखो में आंसू होंठों पे मुस्कुराहट लेकर तस्वीर में सिमट जायेगे हम।।

न दुखी हो ये सोच कर कि यह समय बीत रहा,
स्मरण करें कि कितना सुन्दर दो वर्ष का अतीत रहा।।

सविता कश्यप

विशेष--- कमरा नंबर 5

मैं कमरा no 5 हमेशा याद रखूंगा तुम्हें।
एक नया बैच जरूर आएगा पर तुम्हारी यादें यही रहेंगी।
वो तुम्हारा पहले दिन से अब तक का सफर जिंदा है मुझमें ।
सबका बचपन से टीचर बनने का सपना ..आधा सच आधा झूठ कहना ।
याद है NEP की वो पहली फाइल.और तबसे अबतक की फाइलों का सफर ।
पहले बेंच का खाली रह जाना फिर मनोज सर का शिवम और विश्वास को आगे बुलाना ।
विनीता और ज्योति का लेट हो जाना, बहुत सारी बातें और हमेशा डांट खाना,
वो रोज़ सेकंड बेंच पर बैठ जाना और "आज फिर यही बैठ गए यार "कहकर मुस्कुराना ।
स्वाति की लंबी हाइट और स्कूटी का सफर, मनीषा की साइकिल स्टैंड से दोस्ती और खिलखिलाते हुए आना ,
संतोषी की ब्लैकबोर्ड पर कारीगरी और उसके बनाए उपमा की महक अब भी इस कमरे में है ।

अब भी याद है सबका साथ में लंच करना, वो आंचल और नीति के घर का साग ,
स्वाति के राजमा, मनीषा का दाल का पराठा, और अनुराधा का मीठा।
राधा की मोरनी चाल, नेहा की गप्पे, रिद्धि का "ऐसा है"
शिवानी का "यार क्या करना है" सविता की "writing" ,
अदिति के स्लो बोल,एकता के सही जवाब, उर्वशी का ठेठ अंदाज़,
शिवानी शिवा का सीट से प्यार, गुलशेरा का "यार मुझे भी बताओ",
अंजली के ससुराल के किस्से, आकांक्षा और आकांक्षा का "बहन" कहना ।
तुम्हारी आवाज भी फिज़ा में घुली है अब तक, शिवाली का "ए बेबो" कहकर बुलाना,
विनीता का "ओय लड़की", संतोषी का पूरी क्लास में चिल्लाना,
आदर्श का "सुनो सब मेरी बात सुनो ", संजय का "मैं एक बात कहना चाहता हूं" से बुलाना ।

याद रहेगा तारिक का "टेंपो "का सफर, विकास के "तीन फाटक" , योगेश के " कुछ काम " ,
मयंक के "examples", अजय और दीपक की चुप्पी,
अमित की "punctuality", सत्यम के "doubts"
शुभम का सुंदरम हो जाना, सलमान की सुरीली आवाज़,
संदीप जी की मजाक करने की आदत, संतोष का सबकी मदद करना,
अभिषेक का सीधा सा स्वभाव, विक्की की बिंदास बातें ,
अजय जी का सबको प्यार से समझाना,
शिवम और विश्वास के बहाने, और पार्टी के किस्से।
वो दिन याद है अंताक्षरी का, सबने कितना मीठा गाया था ..
सबके अंदर का तानसेन उस दिन बाहर आया था।

विशेष--- कमरा नंबर 5

Quiz के दिन योगेश ने सबको चौकाया था ,
चंचल का "टीटू रॉय" वाला अवतार,
बेस्ट एक्टर का अवार्ड और वो once more वाली बात ।

मैं भूला नहीं हूं तुम्हारे पकड़म पकड़ाई के खेल ,
बच्चो सा लड़ना और मान जाना।
वो योगग्राम की ट्रिप ,लास्ट सीट का मुशायरा ,
बस में डांस, एकता और नेहा का गिरते गिरते बचना ,
आमला की चोरी, योगा की टिप्स, बच्चो के पोज , और ढेर सारी तस्वीरें ।
याद तो तुम्हे भी होगा असेंबली में जाना ,
thought लाना भूलना और कुछ भी कह देना ।
वो २ बजे तक की classes, बीच बीच में सो जाना,
हर क्लास के बाद बाहर जाना कैसे याद नही आएगा ।

पूर्णिमा ma'am का "सुनो ऐसा है " ,
मेघा ma'am ka " class ध्यान से सुनिए "
, मोनू सर का " चिंता मत करो हो जायेगा "
मनोज सर का " सीट पर बैठो मैं बताता हूं "
और अंबिका ma'am ka " कोई डिसिप्लिन ही नही है क्लास में "
भुला तो तुम भी नही पाओगे ।
ये कमरा तुम्हारी या दों से महकता रहेगा ..
तुम जिस दिन भी दुबारा आओगे यादों को ताज़ा पाओगे ।
और मनीषा ने सच ही तो कहा था....
चेहरे पर मुस्कान है पर दिल में कुछ टूट रहा है ..
आज तुमसे तुम्हारा B.Ed. छूट रहा है ।

ज्योति उपाध्याय

नया क्षितिज

बी० एड०, सत्र 2019-21

के० एल० डी०ए०वी० (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, रुड़की

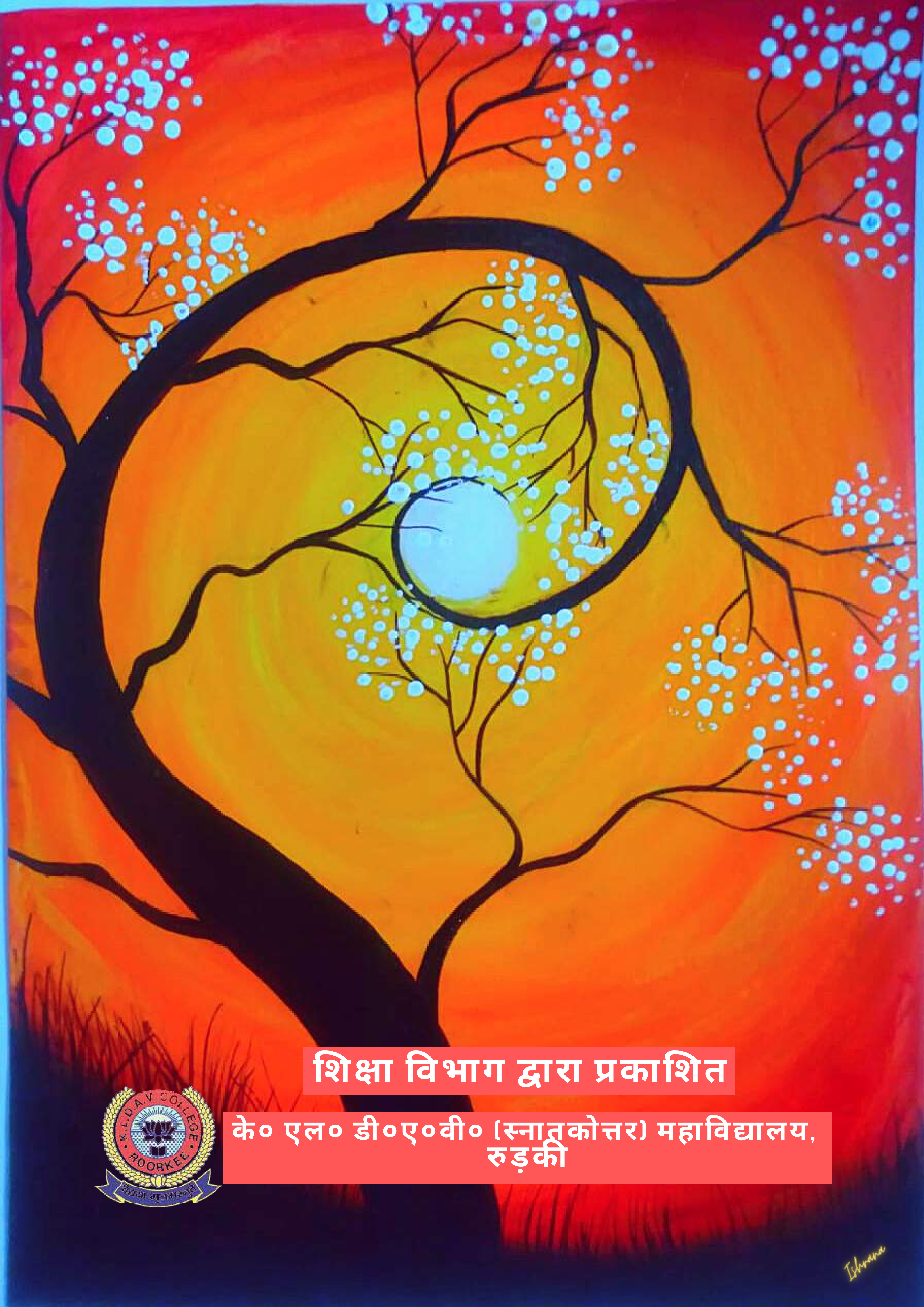

शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित

के० एल० डी०ए०वी० (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, रुड़की